ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक–
वेद, यज्ञ–योग–साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

सितम्बर 2014

मूल्य 15 रू.

आत्म–शुद्धि–पथ

मासिक

फर्रूखनगर आश्रम का 7वां स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

प्रथम चित्र में ध्वजारोहण के पश्चात पूज्य माता कृष्णा झाम बाएं से श्री सुरेन्द्र कुमार बुद्धिराजा जी, स्वामी महेन्द्रानन्द जी, आचार्य विजय पाल जी, ब्र. योगेन्द्र जी, आचार्य राजहंस मैत्रेय जी एवम् पं. रमेशचन्द्र जी।

द्वितीय चित्र में आचार्य राजहंस मैत्रेय जी, श्री वानप्रस्थी ईशमुनि जी, स्वामी महेन्द्रानन्द जी, ब्रह्मचारी योगेन्द्र जी एवम् श्री रामनिवास जी छिल्लर द्वारा श्री बिरेन्द्र जी दौलताबाद गुड़गांव का फूलमालाओं से स्वागत करते हुए।

तृतीय चित्र में श्री सत्यानन्द जी आर्य, ट्रस्ट प्रधान, आचार्य राजहंस मैत्रेय, वानप्रस्थी ईशमुनि, ब्र. योगेन्द्र द्वारा श्री रवि कुमार डायरेक्टर ऑफ अंजनि प्रोपर्टीज का फूलमालाओं से स्वागत करते हुए।

ओ३म्

ओ३म्

आत्मशुद्धि आश्रम संस्थापक कर्मयोगी पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

फर्रुखनगर आश्रम में आयोजित 7वां स्थापना दिवस की सुन्दर झलकियां

आत्मशुद्धि-पथ के नये आजीवन सदस्य बनें

867

श्री विकास छिकारा
धर्मविहार, बहादुरगढ़
हरियाणा

868

श्री मनोज सेठी
बहादुरगढ़,
हरियाणा

प्रिय बन्धुओं! मास सितम्बर में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी अक्टूबर अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-A0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे।

– व्यवस्थापक

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

भाद्रपद-आश्विन सम्वत् 2071 सितम्बर 2014

सृष्टि सं. 1972949114 दयानन्दाब्द 191

वर्ष-13) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-9

(वर्ष 44 अंक 9)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी'

आचार्य राजहंस मैत्रेय

❖

सह सम्पादक

स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, डॉ. मुमुक्षु आर्य

❖

परामर्श दाता: गजानन्द आर्य

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री

(8529075021)

❖

उपकार्यालय प्रबन्धक

ईशमुनि (9991251275, 9812640989)

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

व्यवस्थापक: चन्द्रभान चौधरी

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
आजीवन	: 1500 रुपये (15 वर्ष के लिए)
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रुपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

दूर. : 01276-230195 चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com, rajhansmaitreya@gmail.com

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
विविध समाचार	4
यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं निःशुल्क ध्योग योग विज्ञान शिविर	5
वेद सन्देश	8
सम्पादकीय : जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि	9
अध्यात्म साधना	10
हमारा मित्र	12
सर्वगुण सम्पन्न श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र	15
फर्रुखनगर आश्रम में आयोजित 7वां स्थापना	
दिवस की झलकियां	15
हम ऋषि दयानन्द की जय बोलने के सच्चे....	21
अजवायन गुणधर्म और लाभ	23
निश्रेयस-अभ्युदय की जननी प्राचीन भारतीय समाज	25
हंसो और हंसाओ	27
कड़वा सच	27
ईश्वर से प्रार्थना	27
बुद्धिमान् पण्डित और मूर्ख बादशाह	28
सृष्टि का संचालक निराकार परमपिता परमात्मा है	30
हिन्दी दिवस 14 सितम्बर	33
दान सूची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम का 7वां स्थापना दिवस समारोह उत्साह के साथ सम्पन्न

आपके प्रिय गुरूकुल अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर गुड़गांव में स्वामी धर्ममुनि जी के सानिध्य में 8-9 अगस्त 2014 को बृहद् यज्ञ एवं योग सम्मेलन, प्राचीन गुरूकुल शिक्षा प्रणाली सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन के साथ आश्रम स्थापना दिवस समारोह उत्साह पूर्वक धूमधाम के साथ मनाया गया। जिसमें बड़ी संख्या में पहुंचकर लोगों ने लाभ उठाया।

बृहद्-यज्ञ एवं योग सम्मेलन

8 बजे बृहद् यज्ञ आचार्य राजहंस जी मैत्रेय के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ हुआ। सस्वर वेदपाठ आचार्या आदेश जी के निर्देशन में कन्या गुरूकुल जसात की छात्राओं द्वारा किया गया। यजमान श्री राजवीर जी शास्त्री सपत्नीक जयहिन्द ढाणी, हरिओम सपत्नीक व ईशमुनि जी सपत्नीक भूमिदाता आश्रम रहे आचार्य राजहंस जी मैत्रेय ने वेद मन्त्रों की बीच-बीच में प्रभावशाली सुन्दर व्याख्याएं प्रस्तुत की। श्रोताओं ने जिसे मन्त्रमुग्ध होकर सुना। आचार्य जी ने यजमानों का परिचय देते हुए सामूहिक रूप से आशीर्वाद दिलाया। इसके बाद गुरूकुल की छात्राओं ने ईशभक्ति का सुन्दर भजन प्रस्तुत किया।

प्रातः 9 बजे स्वामी धर्ममुनि जी मुख्यधिष्ठाता आश्रम के सानिध्य और श्री कन्हैयालाल जी की अध्यक्षता में योग सम्मेलन प्रारम्भ हुआ जिसमें मुख्य अतिथि श्री बीरेन्द्रकुमार जी दौलताबाद रहे विशिष्ट अतिथि मा. हरिसिह जी जमालपुर रहे श्री रविकुमार डाइरेक्टर आफ अन्जनि प्रोपट्रीज बहादुरगढ गुरूकुल की छात्राओं और प्रसिद्ध भजनोंपदेशक महाशय रामगोपाल जी वैद्य मथुरा द्वारा ओजस्वी सुमधुर भजनों का कार्यक्रम चला। स्वामी महेन्द्रानन्दजी योगनिष्ठ सत्यपाल जी वत्स, शिव स्वामी एवं आचार्य रविशास्त्री जी द्वारा योग विषयक बहुत से पहलुओं पर प्रेरणाप्रद व्याख्यान प्रस्तुत किये जिन्हें श्रोताओं द्वारा सराहया गया सम्मेलन के मुख्य वक्ता आचार्य चन्द्रदेव गुरूकुल झज्जर ने योग विषय पर सरलता से प्रकाश डाला श्री कन्हैयालाल जी आर्य ने अपना अध्यक्षीय प्रेरणाप्रद उद्बोधन दिया जिसमे योग की सार्थकता को प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात् पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी के आशीर्वचन के साथ योग सम्मेलन का समापन हुआ। मन्च संचालन श्री राजवीरजी आर्य ने बडी कुशलता के साथ किया।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली सम्मेलन

सायं 4 बजे पूर्ववत आचार्य राजहंस जी मैत्रेय के ब्रह्मत्व में यज्ञ चला यजमान श्री विक्रम देव शास्त्री, ब्र. योगेन्द्र जी श्रीहर भजन जी आदि यजमान रहे सभी को सामूहिक रूप से आशीर्वाद दिलाया गया। छात्राओं द्वारा ईश्वर भक्ति का भजन प्रस्तुत किया गया

तदोपरान्त प्राचीन गुरूकुल शिक्षा प्रणाली सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। जिसकी अध्यक्षता कन्या गुरूकुल लोवांकला की आचार्या राजन मानने की। महाशय राम गोपाल जी वैद्य स्वामी हरीश मुनि जी म. विश्वमुनि जी एवं गुरूकुल लोवां कलां की छात्राओं ने सुमधुर भजनों का कार्यक्रम रखा। आचार्य वेदमित्र बहुअकबरपुर आचार्य सत्यपाल जी फर्रूखनगर आचार्या आदेश डा. मनोजकुमार शास्त्री बादली आदि विद्वानों ने गुरूकुल शिक्षापद्धति की उपादेयता पर पर्याप्त प्रकाश डाला । आचार्य राजहंसजी मैत्रेय ने प्राचीन गुरूकुल शिक्षा प्रणाली के दो वर्गो में विभाजित करते हुए बताया कि आध्यात्मिक भाग में आचार्य छात्र को अर्न्तयात्रा कराता है और बाह्य भाग में छात्र को शास्त्रों द्वारा लौकिक, व्यावहारिक, व्यावसायिक,तथा अन्य आवश्यक जीवनोपयोगी ज्ञान कराता है आज आध्यात्मिक ज्ञान खो गया है जिसके कारण गुरूकुलों की दशा चिन्तनीय है। जिसे पुनः स्थापित करना होगा कन्या गुरूकुल की आचार्या राजन मान ने अपने उद्बोधान में कहा कि गुरूकुल की शिक्षा पद्धति ही उपादेय है उसमे आयी हुई कमियो को दूर करना चाहिए। स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी ने अपने आशीर्वचन में कहा कि गुरूकुल शिक्षा पद्धति से ही समाज और राष्ट्र का भला हो सकता है इसी का अनुगमन का आहवान किया। श्री राजवीर जी आर्य ने गुरुकुलीय शिक्षा को बेहतर बताते हुए उसी का अनुगमन का आहवान किया। शान्तिपाठ के बाद सभा विसर्जित हो गयी।

राष्ट्ररक्षा एवं आश्रम स्थापना दिवस समारोह

प्रातः 8 बजे आचार्य राजहंस जी मैत्रेय के ब्रह्मत्व मे मंत्रो की व्याख्या करते हुए पूर्ववत यज्ञ

यज्ञ-योग-साधना के लिए बहादुरगढ़ चलो! ॥ ओ३म् ॥ यज्ञ-योग साधना के लिए बहादुरगढ़ चलो

राष्ट्र, धर्म व मानवता के सबल रक्षक वेद-यज्ञ-योग साधना केन्द्र

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ का
48वां स्थापना दिवस-वार्षिकोत्सव समारोह पर

यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं निःशुल्क ध्यान योग विज्ञान शिविर

(शुक्रवार दिनांक 26 सितम्बर से बृहस्पतिवार दिनांक 2 अक्टूबर 2014 तक)

सानिध्य- पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी मुख्याधिष्ठाता आश्रम

योगनिर्देशक एवं यज्ञ ब्रह्मा : डॉ. दिव्यानन्द जी सरस्वती, पातञ्जल योगधाम, ज्वालापुर, हरिद्वार

वेदपाठ : कन्या गुरुकुल लोवां कला की छात्राओं द्वारा

प्रमुख वक्ता : आचार्य राजहंस मैत्रेय आश्रम, आचार्य सत्यपाल गुरुकुल,
डॉ. मुमुक्षु जी आर्य नोएडा, आचार्य खुशीराम जी (वेद प्रचार अ. आर्य प्रसभा दिल्ली)
पं. रामजीवन जी योगाचार्य, आर्य तपस्वी सुखदेव वर्मा (दिल्ली)
आचार्य रवि शास्त्री

भजनोपदेशक : श्रीमती संतोष आर्या गन्नौर, सत्यपाल जी मधुर पंजाबीबाग, दिल्ली,
पं. रमेशचन्द्र आर्य झज्जर, हरियाणा
श्रीमती रामदुलारी बंसल एवं आश्रम के ब्रह्मचारी

कार्यक्रम समय : प्रातः 5 बजे से 6 बजे तक ध्यान, 6 बजे से 7 बजे तक यौगिक क्रियाओं का प्रशिक्षण
प्रातः 8.00 से 11 बजे तक : यज्ञ-भजन-उपदेश, सायं 3 से 6 बजे यज्ञ-भजन-उपदेश,
रात्रि 8 से 10 तक भजनोपदेश और व्याख्यान तथा मल्टीमीडिया हॉल में धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन

आर्य महिला जागृति सम्मेलनः- मंगलवार 30 सितम्बर सायं 3 बजे से
योग सम्मेलनः- बुधवार 1 अक्टूबर प्रातः 10 बजे से
चरित्र निर्माण सम्मेलनः- बुधवार 1 अक्टूबर सायं 3 बजे से

पूज्य आत्मस्वामी जन्मोत्सव एवं आश्रम स्थापना दिवस समारोह

गुरुवार दिनांक 2 अक्टूबर, 2014 यज्ञ पूर्णाहुति प्रातः 9 बजे तत्पश्चात् स्थापना समारोह

आर्यसमाजों के अधिकारी एवं व्यक्तिगत यजमान बनने के इच्छुक इस शुभ अवसर पर सादर आमंत्रित हैं। भारतीय वेशभूषा में यजमान आसनों को सुशोभित करने के लिए शीघ्र अपना नाम यजमान सूची में लिखवायें। बाहर से आने वाले माताओं/बन्धुओं/साधकों/याज्ञिकों के लिए भोजन एवं निवास की व्यवस्था आश्रम की ओर से निःशुल्क रहेगी। आप अपने पधारने की सूचना 15 सितम्बर से पूर्व शीघ्र प्रेषित करें, जिससे आपके निवास की व्यवस्था उत्तम की जा सके। ऋतु अनुसार बिस्तर अवश्य साथ लावें। अधिक से अधिक संख्या में इष्टमित्रों सहित पधारकर इस विशाल आयोजन से लाभ उठावें। आश्रम बस स्टाप के समीप दिल्ली रोड़ पर स्थित है। (निवेदक)

विक्रमदेव शास्त्री, व्यवस्थापक आश्रम
चलभाष : 9896578062

वानप्रस्थी ईशमुनि, संयोजक
चलभाष : 9812640989

सत्यानन्द आर्य
प्रधान (ट्रस्ट)

कन्हैयालाल आर्य
उपप्रधान

दर्शनकुमार अग्निहोत्री
मन्त्री

सत्यपाल वत्स
उपमन्त्री

आत्मशुद्धि आश्रम (पंजीकृत न्यास) बहादुरगढ़-124507, जिला झज्जर, हरियाणा
दूरभाष : 01276-230195, चलभाष : 09416054195

चला। यजमान आसन को श्री अशोक जी जून सपत्नीक बहादुरगढ़, कर्नल राजेन्द्र सिंह सहरावत बहादुगढ़, श्री अम्बरीश जी झाम गुड़गाव, पूर्व सुप्रीरिटेन्डेट श्री नाहर सिंह जी, मा.हरिसिंह जी आदि ने सुशोभित किया। वेदपाठ कन्या गुरुकुल जसात की छात्राओं द्वारा किया गया। आचार्य जी ने यजमानो का परिचय देते हुए सामूहिक रुप से आशीर्वाद दिलाया। तत्पश्चात माता कृष्णा झाम गुड़गाव एवं श्री अमरीश जी झाम गुड़गाव के कर कमलों द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर आचार्य विजयपाल जी तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

आचार्या आदेश जी के सुमधुर भजन द्वारा राष्ट्र रक्षा एवं आश्रम स्थापना दिवस समारोह का प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम स्वामी धर्ममुनि जी के सानिध्य एवं आचार्य विजयपाल जी प्रधान आर्य प्र.नि.सभा हरियाणा की अध्यक्षता में चला। मुख्य अतिथि श्री रवि कुमार जी अन्जनि प्रोपर्टी बहादुरगढ़ रहे। पं. रमेशचन्द्र जी, पं. जयभगवान जी झज्जर, महाशय रामगोपाल जी मथुरा, स्वामी हरीशमुनि जी, म. विश्वमुनि जी आदि ने ईशभक्ति, राष्ट्र रक्षा आदि विषययक प्रेरणापद भजनो के द्वारा श्रोताओं को मंत्र मुग्ध किया। भारत स्वाभिमान झज्जर के बच्चे द्वारा आसनो का प्रदर्शन किया गया। पं. रामजीवन जी, स्वामी आनन्द मुनि, सुरेन्द्र कुमार बुद्धिराजा, कन्हैयालाल जी,श्री राजवीर जी, डा.मनोज कुमार जी, अशोक नागपाल जी, नाहर सिंह जी आदि ने के प्रभावशाली व्याख्यान प्रस्तुत किये। इस मौके पर श्री रवि कुमार जी, श्री विरेन्द्र जी आर्य दौलताबाद तथा अन्य महानुभावो का भव्य स्वागत किया गया। आचार्य विजयपाल जी ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान मे राष्ट्र रक्षा एवं संस्कारों पर बल देते हुए आहवान् किया कि हम सभी को अच्छे संस्कारो द्वारा राष्ट्र रक्षा करनी चाहिए। श्री जगवीर जी ने मंच संचालन करते हुए सुन्दर कविता का पाठ किया।? स्वामी धर्ममुनि जी मुख्याधिष्ठाता आश्रम ने आगामी कार्यक्रमों की सूचना दी और आश्रम द्वारा संचालित विविध सेवा कार्यों का परिचय देते हुए सभी संन्यासियों विद्वानों दानियों कार्यकर्त्ताओं और साधक साधिकाओं का हार्दिक धन्यवाद किया। कार्यक्रम की व्यवस्था वानप्रस्थी ईशमुनि जी, विक्रम देव शास्त्री हरिओम् आर्य व आश्रम के छात्रों द्वारा सुन्दर ढंग से की गयी।

जन्म दिवस मनाये गये

श्री अनिल कुमार सुपुत्र श्री सन्तराम जी लोहचव, बहादुरगढ़ ने दिनांक 10 अगस्त 2014 को अपना 46वां जन्मदिवस स्वामी धर्ममुनि जी के सानिध्य में बड़े उत्साह के साथ आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ की भव्य यज्ञशाला में यज्ञ सत्संग के साथ मनाया। इस अवसर पर श्री अनिल जी अपनी धर्मपत्नी के साथ स्वयं यजमान बने। और श्रद्धापूर्वक पूज्य स्वामी जी से मंगलकामनाओं के साथ सुदीर्घायु का आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर आचार्य राजहंस जी मैत्रेय ने जन्मदिवस को जीवन को महत्वपूर्ण दिवस बताते हुए आत्म निरीक्षण कर उन्नति के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरणा दी। परिवार की ओर से सभी के लिए प्रीतिभोज की व्यवस्था श्री विक्रम देव शास्त्री जी द्वारा की गयी।

❑❑❑

श्री सुमित एवं श्रीमती सुमन सुपुत्र राज वाला धर्मपत्नी रामफल जी दलाल बहादुर ने अपनी पुत्र आयु. ऋषिता के दूसरे जन्म दिवस पर आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ की पावन यज्ञशाला में पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी के सानिध्य में यज्ञ हवन के साथ बड़ी प्रसन्नतापूर्वक मनाया। इस अवसर पर बालिका को श्री राजवीर जी आर्य तथा आचार्य राजहंस जी मैत्रेय ने अपनी शुभकामनाएं देते हुए आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर परिवार की ओर से सभी के लिए प्रीतिभोज की व्यवस्था की।

स्वामी शक्तिवेश जी का जन्म दिवस मनाया गया

वैदिक सत्संग मण्डल व यज्ञ समिति झज्जर के तत्वावधान में आर्यजगत के महान संन्यासी स्वामी शक्तिवेश जी महाराज का जन्म दिवस बड़ी धूमधाम से गांव कलोई में मनाया गया। जिसमें यज्ञ ब्रह्मा सुबेदार भरतसिंह, यजमान विवेक कुमार रहे। इस अवसर पर बृहद यज्ञ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम अध्यक्षता आचार्य राजहंस मैत्रेय आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ ने की। और मुख्य वक्ता योगाचार्य रमेश आर्य रहे। आचार्य मैत्रेय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि इस गांव की माताऐं धन्य है। जिन्होने दो संन्यासी स्वामी नित्यानन्द व स्वामी शक्तिवेश जी जैसे महान पुरुष पैदा किए। जो व्यक्ति कथनी और करनी से एकरूपता रखता है और कठिनाईयों से घबराता नहीं है, वही महान बनता है। स्वामी शक्तिवेश जी एक झुझारू, कर्मठ व निडर व्यक्तित्व के धनी थे। इसीलिए उन्होंने थोड़े समय में भी आर्य समाज का बहुत काम किया है। जिन्हें हमेशा याद किया जाएगा। मण्डल अध्यक्ष पं. रमेश चन्द्र कौशिक ने कहा कि महान माताऐं तभी बनेगी जब बेटी बचेगी। माताओं की रक्षा के लिए बेटी को बचाना बहुत जरूरी है और हमें कन्या भ्रूण हत्या को अभिशाप मानकर इसका विरोध करना चाहिए और सृष्टि के विस्तार में रूकावट नहीं डालनी चाहिए। बालक बालिकाओं को वैदिक साहित्य देकर सम्मानित किया गया। बच्चों द्वारा योग प्रदर्शन दिखाया गया जो कि भारत स्वाभिमान से जुड़े हुए है। कार्यक्रम का संयोजन पं. जयभगवान आर्य व ओम प्रकाश यादव ने किया। मंच का संचालन ब्रह्मचारी सुभाष आर्य ने किया। इस अवसर पर गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

साप्ताहिक यज्ञ-योग का आयोजन

भारत स्वाभिमान एवं पतंजलि योग समिति जिला झज्जर के तत्वावधान में साप्ताहिक यज्ञ-योग का आयोजन मौ. भट्टी गेट पर किया गया जिसमें भजन व प्रवचन का भी कार्यक्रम हुआ। इस कार्यक्रम में यजमान श्रीमती मामकौर एवं महाशय रतीराम आर्य रहे व यज्ञ ब्रह्मा श्री योगाचार्य विवेक जी गोयल रहे। इस कार्यक्रम में राष्ट्र की सुख-शान्ति व समृद्धि के लिए यज्ञ द्वारा कामना की गई।

मुख्यातिथि पं. रमेशचन्द्र कौशिक तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री पूर्णासिंह जी देशवाल व मंच का संचालन श्री प्रवीण जी आर्य व ब्र. इन्द्रजीत जी ने किया। पं. जयभगवान आर्य, सुरजीत जी, सुबेदार भरत सिंह, लाला प्रकाशवीर आर्य, रमेश सैनी, डॉ. राजेश बंसल आदि उपस्थित रहे। **- सुभाष आर्य**

विवाह पर आजीवन सदस्य बने

कन्हैया लाल आर्य उपप्रधान आत्मशुद्धि आश्रम ट्रस्ट बहादुरगढ़ की भांजी कुमारी शिल्पा सुपुत्री श्री अशोक सेठी एवं श्रीमती कैलाश सेठी लक्ष्मी गार्डन गुड़गांव का शुभविवाह प्रिय लव कुमार सुपुत्र स्व. श्री जी.आर खन्ना एवं स्व. श्रीमती सोजी बाई ज्योति पार्क गुड़गांव के साथ 25 अप्रैल 2014 को वैदिक से सम्पन्न हुआ। आत्मशुद्धि पथ मासिक पत्रिका के आजीवन सदस्य बने। हम इनके सुखद जीवन की मंगल कामना करते हैं।

वेद सन्देश

वह एक है!

\- आचार्य अभयदेव

इन्द्रं मित्रं वरुणामग्निमाहुरथो दिव्यः
स सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं
मातरिश्वानमाहुः॥

\- ऋ 1.164.46, अथर्व 9.10.28

ऋषिः-दीर्घतमा॥ देवता-सूर्यः॥
छन्दः-निचृत्त्रिष्टुप॥

शब्दार्थ- **विप्राः**=ज्ञानी पुरुष **एकं सत्**=एक ही होते हुए को **बहुधा वदन्ति**=अनेक प्रकार से बोलते हैं। उस एक ही को **इन्द्रं, मित्रं, वरूणं, अग्निं आहुः**=इन्द्र, मित्र, वरूण, अग्नि कहते हैं। **अथो सः दिव्यः सुपर्णः गरुत्मान्**= और वही दिव्य, सुपर्ण, गरुत्मान् कहलाता है **अग्निं यमं मातरिश्वानं आहुः**=उस एक ही को अग्नि, यम और मातरिश्वा कहते हैं।

विनय- हे मनुष्यो! इस संसार में एक ही परमात्मा है। हम सब मनुष्यों का एक ही प्रभु है। हम चाहे किसी सम्प्रदाय, किसी पन्थ, किसी मत के माननेवाले हों, पर संसार-भर के हम सब मनुष्यों का एक ही ईश्वर है। भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न-भिन्न सम्प्रदायवाले उसे भिन्न-भिन्न नाम से पुकारते हैं, पर वह तो एक ही है। जो जिस देश में व जिस सम्प्रदाय के वायुमण्डल में रहा है, वह वहां के प्रचलित प्रभु नाम से उसे पुकारता है। कोई 'राम' कहता है, कोई 'शिव' कहता है, कोई 'अल्लाह' कहता है, कोई 'लॉर्ड' कहता है। 'विप्रो' ने, ज्ञानी पुरुषों ने, उस प्रभु को जिस रूप में देखा, उसके जिस गुणोत्कर्ष का उन्हें अनुभव हुआ, अपनी भाषा में उसी के वाचक शब्द से उसे वे पुकारने लगे। उन विप्रो द्वारा वही नाम उस समाज व सम्प्रदाय में फैल गया। कोई विप्र गुरु से ग्रहण करके उसे 'ओं' या 'नारायण' नाम से पुकारता है, तो कोई अपने महात्माओं और सद्ग्रन्थों से पाकर उसे 'खुदा' या 'रहीम' कहता है, परन्तु वह प्रभु एक ही है।

हम साम्प्रदायिक लोगों ने संसार में बड़े-बड़े उपद्रव किये हैं और आश्चर्य यह कि ये सब लड़ाई-दंगे अपने प्रभु के नाम पर हुए! वैष्णवों और शैवों के झगड़े हुए हैं, हिन्दू और मुसलमानों में रक्तपात हुए हैं, यहूदियों और ईसाइयों के युद्ध हुए हैं- यह सब क्यों? यह सब तभी होता है जब हम यह भूल जाते हैं कि ''एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति''-वह एक ही है, पर ज्ञानी लोगों ने अपने-अपने अनुभवों के अनुसार उसे भिन्न-भिन्न नाम दिया है। ईश्वर होने से वही 'इन्द्र' है, मृत्यु से त्राता होने से वही 'मित्र' है, पापनिवारक होने से वही 'वरूण' है, प्रकाशक होने से वही 'अग्नि' है। वेदमन्त्रों में इन नाना नामों से पुकारा जाता हुआ भी वह एक है। इसी प्रकार वेदमन्त्रों ने 'दिव्य', 'सुपर्ण' (शोभन पतनवाला) या 'गरुत्मान्' (गुरु आत्मा), 'अग्नि', 'यम' (नियन्ता) और 'मातरिश्वा' (अन्तरिक्ष में श्वसन करनेवाला) आदि भिन्न-भिन्न नामों से पुकारा, पर अज्ञानियों ने उसे भिन्न-भिन्न नामों से जुदा-जुदा समझ लिया और जुदा-जुदा कर दिया। वेद की पुकार सुनो-वह एक है! वह एक है!-एकं सत्!

आश्रम द्वारा प्रकाशित
महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

प्राप्ति स्थान : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जि. झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

दूरभाष : 01276-230195 चलभाष : 09416054195

सम्पादकीय

जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि

मनुष्य जाति का उत्थान और पतन उसकी दृष्टि पर निर्भर करता है। जैसी व्यक्ति की दृष्टि होती है वैसी ही वह अपनी व्यवस्था बना लेता है। यदि उसकी दृष्टि स्वस्थ सृजनकारी है तो उसके कार्य भी स्वस्थ एवं सृजनशील होंगे। यदि व्यक्ति की दृष्टि रुग्ण और पतन की ओर जाने वाली हो तो उसके कार्य भी रुग्ण और पतन की ओर ले जाने वाले होंगे। दृष्टि का अर्थ है देखने की क्षमता। यदि वह उत्साह और सृजनात्मक है तो वह जहां भी होगी वहीं उत्साह, परिवर्तन, रचनात्मक कार्य हो जाएगें और यदि दृष्टि कुण्ठित अन्धविश्वासी उलझी हुई और नकारात्मक है तो उसके कार्य भी उसी से उत्पन्न होंगे। हम महापुरुषों में भी देखते है कि बड़ी से भी बड़ी क्रान्ति कर जाते हैं क्योंकि उनके पास सृजनात्मक और क्रान्तिमय दृष्टि होती है। सैकड़ो लोग हैं जिनके पास कोई सम्यक् दृष्टि नही होती। उनका सम्यक् जीवन भी वैसे ही चला जाता है जिसका कोई अर्थ नहीं होता। जिन लोगो के पास सम्यक् और स्वस्थ दृष्टि रही है। उन्होंने अपने चारो ओर के लोगो को उत्साह प्रसन्नता, प्रेम, श्रद्धा व सृजनात्मक गुणों से आपूरित कर दिया है। यह व्यक्ति की दृष्टि का ही चमत्कार होता है। भिन्न-भिन्न दृष्टियों वाले अपनी सृष्टि भिन्न ही रचते हैं। एक बोध प्रदान करने वाली घटना है कि एक फलों के व्यापारी ने अपने व्यवसाय की उन्नति के लिए अपने एक कर्मचारी को एक देश में यह कहकर भेजा कि वहां जाकर पता लगाओ कि वहां हमारा आम और सेब का व्यवसाय अच्छा चल पायेगा या नही। वहां जाकर निरीक्षण करके मुझे बताओं। वह कर्मचारी उस देश मे जाकर प्रचलित सभी फलों के बारे मे जानकारी प्राप्त करता है तो उसे आम और सेब के बारे मे कोई जानकारी उपलब्ध नही हो क्योंकि वहां आम और सेब होते ही नहीं। उसने आम और सेब के स्वाद क बारे में लोगो से खूब पूछताछ की तो लोगो ने कहा कि हमने सेब और आम कभी देखे ही नही तो खायेंगे कहां से। बिना खाये कैसे उनके स्वाद का पता चलेगा और आपको कैसे जानकारी दे सकेंगे। उस कर्मचारी को ना तो कोई आम मिला और न ही कोई सेब और न ही उनका स्वाद। उसने विचार किया कि जब लोग आम और सेब को जानते ही नहीं तो खाने और उनके स्वाद की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती। फिर उसने विचार कर निश्चय किया कि यहां हमारे फलों का व्यवसाय नहीं चल पायेगा क्योंकि न तो कोई इन्हें जानता और न ही इन्हें खाना पसन्द करेगा और न ही कोई इन्हें खरीदेगा। लौटकर उसने अपनी रिपोर्ट अपने मालिक के सामने प्रस्तुत कर बताया कि हमारा व्यवसाय वहां नही चल पायेगा उस फल के व्यापारी ने सारी बातों को ध्यान से सुना। बहुत विचारने के बाद और किसी चतुर कर्मचारी को उसी स्थान पर वही बात जानने के लिए अपना व्यवसाय चलाने के उद्देश्य से भेजा उसने भी वहां जा कर पता लगाया। वहां पर सभी फल मिले परन्तु आम और सेब के फल नहीं मिले उसने आम और सेव को यहां सेवन किया जाता है इसके सम्बन्ध में लोगो से पूछा तो सब ने कहा उन्हें हम नही जानते कि ये क्या होते हैं खाने की बात तो बहुत दूर, उस कर्मचारी ने सारी बातों का पता और लगाया लौट कर अपनी सारी जानकारी अपने मालिक को दी और कहा कि हमारे व्यवसाय की उन्नति की ज्यादा संभावना है क्योंकि वहां आम और सेब जब होते ही नही तो आम और सेब को नये फलों के रूप में प्रचारित किया जायेगा तो धीरे धीरे लोग खरीदना प्रारम्भ कर देंगे। यदि उचित मूल्य पर फल दिये जाते हैं तो एक दिन उनका व्यवसाय बड़े स्तर पर होगा और हम अच्छा लाभ कमा पायेंगे फलों के व्यापारी ने पहले कर्मचारी को भेज कर पाया कि व्यवसाय नहीं चल पायेगा फिर दूसरे कर्मचारी को भेजा तो पाया कि फलों के व्यवसाय बहुत अच्छा चलेगा और हम अच्छा लाभ कमा सकेंगे। एक ही देश है वही लोग हैं पहले कर्मचारी को आम और सेब जैसे फलों के व्यापार की संभावना दिखाई नहीं देती वहीं दूसरे कर्मचारी को फलों के व्यापार की उन्नति की संभावना दिखाई देती है और अच्छे लाभ की आशा लेकर वापिस लौटकर आता है तथा अपने मालिक का आशान्वित कर देता है। एक व्यक्ति अपनी दृष्टि से जहां कोई उन्नति की संभावना नहीं देखता तो वहीं दूसरा व्यक्ति उन्नति की संभावना तलाश लेता है। एक व्यक्ति जिसकी दृष्टि खुली नही है वह जहां संभावना है वहां असंभावना तलाश लेता है और दूसरा व्यक्ति जहां उन्नति की असंभावना है वह वहां संभावना देख लेता है इसलिए जैसी व्यक्ति की दृष्टि होती है वैसी ही उसकी सृष्टि होती है वह अपने चारो ओर वैसा ही संसार निर्मित कर लेता है यही इस उक्ति का अर्थ है जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि।

-राजहंस मैत्रेय

अध्यात्म साधना

(गप्तांक से आगे)

- अशोक कुमार शास्त्री

हृदय साधना

साधकों को ईश्वरीय व्यवस्था में पूर्ण निष्ठा होनी चाहिए। प्रभु हमारे सर्वत्र रक्षक है, पवित्र और निर्लिप्त भाव से जिम्मेदारियों का निर्वाह करना चाहिए। यह दृष्टान्त ध्यान देने योग्य है कि शहद से पूर्ण रखे पात्र में मधुमक्खी यदि किनारे बैठकर शहद पान करती है, तो वह शहद का स्वाद चख सकती है यदि वह शहद के बीच में कूद पड़ती है तो पंख टूट जाते है और वह अपने प्राण गवां देती है। प्रभु भक्ति तथा निष्ठा व्यवहार में प्रकट होनी चाहिए। वाणी के कथ्य में अधिक तथ्य नहीं होता, जब तब व्यवहार के द्वारा लोगों को सन्तुष्ट नहीं किया जाता। बच्चों के प्रति वात्सल्य भाव, असहाय कमजोरों के प्रति करूणांभाव, बड़ों के प्रति सम्मानभाव हृदय में बनाए रखेंगे। उपार्जित में से दयाभाव जागृत कर दान देगें। अपने हृदय से मिथ्याभिमान, दम्भ, द्वेष को दूरकर, विनम्रता का भाव जगाए रखेगें। सभी व्यवस्थाओं तथा प्राणिमात्र की गतिविधियों में प्रभु का दर्शन करेगें। ईश्वर समर्पण-स्मरण मेरा पवित्र कार्य होगा। संसार प्रभु मन्दिर है मेरा प्रत्येक कार्य प्रभु परिक्रमा होगा। जो देखूं, सुनुं, उसमें प्रभु की सुन्दरतम ध्वनि हो। मेरा शयन उसे दण्डवत हो। हमारे सभी कार्य उस विराट रूप की सेवा हों। उसकी हर लीला में रस लेना मेरे हृदय का पवित्र कार्य होगा। कीर्तन गाते हुए इसी भाव को जगाने की चेष्टा की जाती है। (राधा रमण हरि गोविन्द जय जय) राधा (प्रकृति) के कण-कण में समाए हुए (हरि गोविन्द) प्रभु की जय जय (स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के शब्दों में "हे ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो। तूने अच्छी लीला की। "अन्तत: देवेच्छा बलीयसी"। का ध्यान रहे।

जप तप ध्यान साधना

जप अचेतन मन को जागृत करने की विधि है। सदगुण समुच्चय प्राप्त करके परमात्मा से अन्तरात्मा को जोड़ने का साधन है" तदजपस्तदर्थभावनम" ईश्वरीय गुणों को आत्मसात करने की प्रक्रिया है, जप योग। बुद्धि की निर्मलता अवस्था की परिपक्वता विचारों में विवेकशीलता के साथ-साथ ऋद्धि सिद्धि का स्वामित्व जप से प्राप्त होता है, ईश्वरीय प्रकाश आत्मा में उतर आता है, परम उद्देश्य प्राप्त करने का अमोध अस्त्र है जप, सूक्ष्म शरीर में स्थित चक्रों, ग्रन्थियों को जप शीघ्र ही प्रभावित करता है, उनकी मूर्छा जगाकर, जागृति उत्पन्न करता है, दिव्य संस्थान में आत्मबल का संचार हो जाता है जप से, साधक का व्यक्तित्व पूर्ण पराकाष्ठा को प्राप्त करता है, जप ध्यान का मार्ग, प्रशस्त करता है, "ध्यान निविषयं मन:" ध्यान से किल्विषविहीन मन बन जाता है, ईश्वर स्मरण मन: स्थापन ईश्वर में पूर्ण तादात्म्य प्राप्त हो जाता है। तप एवं ध्यान के बल से साधक निज जीवन में चरित्र वान, विवेकावान, प्रतिभावान हो जाता है, संकीर्ण स्वार्थपरता विलासी और परिगृही जीवन छोड़कर दायित्व बोध प्राप्त कर परमार्थी एवं सुखी हो जाता है। साधना एकान्त उत्सव है जिसमें अपना आपा है, बन्धन हीनता है उल्लास प्रवाह को जीवन्त रखने की कला है, ऐसी साधना रेवा नदी के तट पर भगवान शंकर ने की। स्वामी विवेकानन्द जी ने। मेधना के तट पर तथा अनोम नदी के किनारे भगवान बुद्ध ने कभी न बुझने वाली दीप शिखा प्रज्वलित किया और अपने परिवेश को आलोकित कर लिया। अपने मानस की अयोध्या में साधना से ऐसे दीप कमल खिलाए जो कभी बुझे नहीं। आज भी जन जीवन को अपनी महक दे रहें हैं।

विचार साधना

विचारों का जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है, माता-पिता का दुलार अध्यापक की शिक्षा, मित्र का व्यवहार, शत्रु की शत्रुता, विचार प्रभावित है, डॉक्टर और कसाई दोनों छु[illegible]से काम करते है पर दोनों की भावनाओं ओर विचार[illegible]ें अन्तर है, डाक्टर रोगी के सुख के लिए कसाई नि[illegible] स्वार्थ के लिए काम करता है, चील आकाश में उड़ता है परन्तु उसकी दृष्टि जमीन पर पड़े माँस के टुकड़े पर होती है, विचारों से अस्वस्थ व्यक्ति यदि किसी श्रेयस्कर जगह पहुंच भी जाए तो उसका लाभ नहीं उठा सकता। हंस जमीन पर रहता है उसकी इच्छा सदा स्वछन्द अनन्त आकाश में उड़ने की होती है। साधक संसार में रहते हुए भी

परमात्मा रूप अनन्त आकाश में अपना मन रखता है, सर्मपण करता है, तन से सेवा, धन से सहायता करता है, उसके तरने में कोई कठिनाई नहीं है, वह जहां भी जाता है वह स्थान पावन और तीर्थ हो जाता है। साध को का जिन्हें आशीर्वाद मिल जाए वह तर जाता है। साधक मुख समान है कह कर शरीर के सारे कष्ट मिटा देता है। गौतम बुद्ध के दर्शन मात्र से अगुंलीमाल डाकू से भिक्षुक बन गए। सन्तों के दर्शन से रत्नाकर डाकू से महर्षि वाल्मकि हो गए।

चरित्र साधना

हमारा चरित्र आदर्श हो आने वाली पीढ़ी के लिए अनुकरणीय हो, चरित्र दोष के कारण शर्मिन्दा न होना पड़े, चरित्र व्यक्ति की अमूल्य निधि है, मन, वचन, कर्म पावन और दूसरों के लिए सुखकर हो, सरलता, निश्छलता परिश्रम जीवन के अभिन्न अंग हों, विषम परिस्थितियों में भी क्रोध और अवसाद को अपने पास न रहने दें। अपने अंदर छिपे हुए धैर्य शान्ति, क्षमा, प्रेम, सहिष्णुता को जागृत कीजिए। दूसरों द्वारा किए अपमान और असुविधा को भूला दें, चंचलता और सुख लिप्सा मन की गति है। बंद जैसी उछलकूल, मटरगश्ती, चिड़ियों जैसा काम विकार और फुदकना, चंचल वृति तथा कल्पना लोक में भ्रमण और भटकने में समय और शक्ति नष्ट न करें। इस सीजन को रोककर सार्थक प्रयोजन में ध्यान केन्द्रित कर संयम का पालन करें। संयम से शक्तियों का सही उपयोग होता है। पिछड़ापन छूट कर प्रगतिशीलता प्राप्त होती है, दरिद्रता समृद्धि में बदल जाती है, परिस्थितियां अनुकूल बनने लगती है, साधन संचित होने लगते हैं, जीवन लक्ष्योन्मुख हो जाता हो, चरित्र में संयम की बड़ी महत्ता है संयम से सधा मन आत्मिक क्षेत्र में लगाने से सुषुप्त शक्ति केन्द्रों को जागृत और क्रियाशील किया जा सकता है, दिव्य क्षमताएं प्राप्त होकर अन्तर चेतना जागृत कर चरित्र महामानवों जैसा बनाया जा सकता है। सुख लिप्सा, अहंकार दूसरों पर प्रभाव डालने की वृत्ति संयम, स्वामित्व, तृष्णा, काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद आदि को जीवन में स्थान न दें। इन्द्रियों के विषय: शब्द रूप रस, गंध स्पर्श के दुरुपयोग से बचे और इनका सही लाभ उठाए।

संयम सेवा समीक्षा

सुख मन का विषय है और आनन्द और आत्म संतोष आत्मा का, सुख लिप्सा का अभ्यस्त मन आनन्द का स्वाद नहीं जान पाता। जाने बिना आर्कषण और स्थाई प्रीति संभव नहीं। विषय लोलुप मन में आनन्द आँकाक्षा उत्पन्न नहीं होती। इसलिए मन का संयम और प्रशिक्षण आवश्यक है। बुद्धिमान प्रगृतिशील ऐसे व्यक्ति होते है जो चित्त की चंचलता को निर्यंत्रित कर अपने लक्ष्य पर टिकाए रखता है, वे चाहे विद्यार्थी हों, वैज्ञानिक हो, साधक चिन्तक या दार्शनिक हों। दलदल में आकण्ठ फंसे व्यक्ति प्रगति के पथ पर कैसे अग्रसर हो सकते हैं। प्रथम प्रयास डूबने की स्थिति में उबरने का होना चाहिए। मन को तृष्णा से शरीर को वासना से बचाना ही संयम हैं ऊंचा उठने का सुयोग तभी संभव है जब लोकेषणा वित्तेषणा, पुत्रेषणाओं के मार्ग पर दौड़ने की आदत बदली जाए। आदर्श महत्वकांक्षा के मार्ग पर चल कर महानतम लक्ष्य प्राप्त किया जाएं महत्वकाक्षाएं वहीं श्रेयस्कर है। जो बड़ा नहीं महान बनाए। महान बनने का एक ही उपाय है कि दृष्टिकोण और कार्यक्रम महान हो, उत्कृष्ट चिंतन आदर्श चरित्र शालीन व्यवहार महानता की समग्र आकृति बनाते है। यही गंगा यमुना सरस्वती का संगत है जो हमें तारने का कारण होगा। प्राणीमात्र की सेवा करना मनुष्य मात्र का पुनीत कर्तव्य है। यह विराट ब्रहम की आराधना है, गीता के अनुसार "**ते प्राप्नुवन्ति मां ये सर्व भूतहितेरता:**" जो सब जीवों का हित चिन्तन करते है वह मुझे प्राप्त होते हैं, साधक लोक आराधक बने, बालक वृद्ध रोगी, संकट ग्रस्त जनों की उपेक्षा न हो, दुखियों का दुख दूर करना पुनीत कर्तव्य है, सेवा के लिए कोई स्थान निर्धारित नहीं है, सच्चा सेवक वही है जो बिना प्रर्दशन अपना काम करता रहे। प्रशंसा प्राप्त करने के लिए नहीं, वरना अपना कर्तव्य समझ कर समस्त अध्यात्म साधनाओं का उद्देश्य जीव को ब्रहम् तक पहुँचाना है। आत्मा को परमात्मा में विलीन करना है, भक्त को भगवान से मिलाना है, सेवा द्वारा व्यक्ति सबमें अपनी आत्मा को ही देखने का अभ्यास कर लेता है। 'सर्वभज्रुत हिते रता:' ही सर्वश्रेष्ठ योगी है। सब प्राणियों में आत्म तत्व द्रष्टा श्रेष्ठ मानव है। परमार्थ साध ना से चेतना असाधारण रूप से विकसित हो जाती है। अपार आनन्द का लाभ मिलता है। परमार्थ लीन व्यक्ति को कुछ भी दुर्लभ नहीं है। **(शेष अगले अंक में)**

हमारा मित्र

- अभिमन्यु कुमार खुल्लर

इस संसार में आने के पश्चात् हम बचपन से ही मित्र बनाने लगते हैं। सांसारिक प्रवाह में अनेक मित्र जुड़ते हैं और अनेक मित्र पीछे छूट जाते हैं। जो पीछे छूट जाते है, न हम उन्हें याद करते हैं और न ही वे हमें। हमें बुरा भी नहीं लगता। शायद इसे ही संसार की रीत कहते है। यह समझने का मौका आयु के अंतिम पड़ाव में ही मिलता है, उससे पहले नहीं। मैं एक ऐसा मित्र जानता हूँ, जो होता तो जन्म के साथ है, पर जब आप उसे मित्र मानकर चलना प्रारम्भ कर देते हैं तो वह आपका साथ कभी नहीं छोड़ता।

ईश्वर के साथ व्यक्ति ने अनेक सम्बन्ध बनाये हैं-माता-पिता, गुरु, दाता और न जाने क्या-क्या। ये सब सम्बन्ध ईश्वर को उच्चासन पर और भक्त को नीचे आसन पर बिठा देते हैं। मुझे ये संबंध जोड़ने में उतना आनन्द नहीं आया, जितना मित्र का संबंध जोड़ने से आया। 'मैत्री' शब्द में अपनत्व की प्रगाढ़ता, विश्वास, खुलापन और बराबर की हिस्सेदारी अन्तर्भूत है। सामान्यतया यही कहते हैं कि संकट में, विपत्ति में जो काम आए वहीं मित्र' कहलाता है। यह पैमाना ठीक है, पर छोटा है। मित्र की यह परिभाषा जब दृष्टिगोचर हुई तो मैं उछल पड़ा-सच्चा, मित्र वही है जो आपके अत्यन्त गुप्त भेद को, किसी भी संकट में पड़ने पर प्रकट नहीं करता।

मेरी यह बात वही समझ सकता है, जिसको यह बात अनुभव करने का मौका मिला हो। मौका, मिलता तो अनेक को है पर मित्रता की कलई उतारने का यह स्वर्ण अवसर बन जाता है। दूसरे को चाहे वह निकट संबंधी हो या घनिष्ठ मित्र नीचा दिया कर, अपना महत्व सिद्ध करने की लालसा इतनी प्रबल होती है कि मित्रता भाड़ में झौंक कर भी वह वह सुख उठाता ही है। पर, यदि ऐसा मौका मिले और आप परपीड़ा जनित सुख का लोभ संवरण कर पाऐं, जो आप अनचाहे उच्चासन पर विराजमान हो जाते हैं और सर्वाधिक विश्वसनीय बन जाते हैं।

मैं व्यक्तिगत जीवन से यथार्थ उदाहरण प्रस्तुत करना चाहूँगा। नाम-पते का उल्लेख नहीं कर सकूँगा। छदम् नाम-पता भी नहीं लिखूंगा। कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारी ने जिनसे मेरा कोई घनिष्ट संबंध नहीं था और परिचय भी कुछ पुराना नहीं था, मुझसे पूछा कि कार्यालय के पश्चात् मैं उनके घर आ सकता हूँ। कारण पूछने पर कहा कि घर पर ही बताऊँगा। पता पूछ कर घर पहुँच गया। घर पर कहा-पास वाले मकान में चलो। वहाँ जो उन्होंने कथा सुनाई तो मुझे इस बात पर आश्चर्य हुआ कि एक अनजान व्यक्ति पर उन्होंने इतना भरोसा कैसे किया और उन्हें कैसे विश्वास हुआ कि मैं उनकी सहायता करूंगा। पैतृक जीन्स में निडरता मिली है, शरीर भी काफी हुष्ट-पुष्ट था। मैंने स्वीकृति दे दी। किस्सा यह था कि उनकी नवयौवना पुत्री, एम. ए. की छात्रा, एक मात्र संतान एक आवारा गुण्डे के चंगुल में फंस गई थी। जाने किन परिस्थितियों में उसके घर में आना-जाना हो गया था। दिन व दिन उस लड़के का शिकंजा कसता जा रहा था। जब पानी सिर से ऊपर हो गया तो उनके लिये जीवन-मरण का प्रश्न बन गया। कॉलोनी में वह और उसके यार-दोस्त चक्कर लगाते ही रहते थे। लड़की को भी निकालना और परिवार को भी। मैंने उनसे कहा लड़की को भी निकालना और परिवार को भी। मैंने उनसे कहा लड़की को बुलाइए, मैं उसे अपने घर ले जाता हूँ। आप सपरिवार सुविधा अनुसार आ जाइए। 'एक घण्टे में वे लोग भी घर पर आ गए। सुबह 2 बजे पठानकोट एक्सप्रेस से वह लड़की को लेकर रिश्तेदारी में जाना चाहते थे। उनका घर स्टेशन के पास ही था इसलिए गुण्डों द्वारा घिर जाने की आशंका के कारण मुझे भी साथ ले गए। लड़की की व्यवस्था कर तीन चार दिन बाद ही ग्वालियर लौट आए। आते ही कहा- एक काम और करो। अभी ग्वालियर में हमारा रहना नहीं हो पाएगा, कहीं रेसीडेन्ट ऑफिस में पोस्टिंग कराओ। यह काम बड़ा था। फिर भी मैंने हिम्मत की। संबंधित अधिकारी को जब बताया कि महाशय मय अपने माता-पिता के मेरे घर पर टिके हुए हैं।

अधिकारी महोदय ने मेरी बात की सत्यता पर पूर्ण विश्वास कर ग्वालियर के बाहर तीन साल के

लिए उनकी पदस्थापना तत्काल कर दी। प्रकरण हम दोनों के बीच ही रहा। अब तो मुझे भी सेवानिवृत्त हुए 17 वर्ष हो गये है, सुख मिलता है कि उनके परिवार की मर्यादा पर जाँच नहीं आई। कुछ घटनाओं का वर्णन कर सकता हूँ पर इसलिए नहीं कर पाऊँगा कि पात्र जीवित है और आस पास घूम रहे हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि ऐसे कर्म ईश्वर जोड़ के खाते में अवश्य रख लेता होगा। इस जीवन में ऐसे प्रसंगों से आपका आत्मबल बढ़ता है। ईश्वर पर विश्वास गहराता जाता है, क्यों ईश्वर स्वयं करोड़ो लोगों के अत्यन्त गोपन रहस्यों को प्रकटतया उजागर नहीं करता। एक तो वह मानवीय कार्य व्यापार है दूसरे आग लगाकार मजा लूटना भी उसका गुण-धर्म नहीं है।

ईश्वर की मित्रता में दूसरा गुण उसकी सहायता करने की अपार सामर्थ्य है। वह जैसी सहायता करता है, उसे देखकर हम अनायास ही कह उठते हैं, यह दैवी सहायता है, प्रभु की कृपा है। वेद मर्मज्ञ पं. शिवनारायण उपाध्याय जी (कोटा) ने मुझे एक व्यक्तिगत पत्र में लिखा था कि दैवी सहायता की अनुभूति उन्हें जीवन में अनेक बार हुई है और यही अनुभूति ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण है। मेरा व्यक्तिगत अनुभव भी यही कह रहा है। अपने जीवन के कतपय प्रसंगों को लेखनीबद्ध करता हूँ-

एक पत्नी श्रीमती स्वदेश दोनों छोटे बच्चों, मनीषा व अमित को लेकर पठानकोट, बस स्टेण्ड पर खड़ी थी। बस आ गई थी और धक्का मुक्की में लोग अपना सामान बस पर चढ़ा रहे थे। मैं भी भरी हुई बड़ी वी.आई.पी. की अटैची लेकर चढ़ गया। जब अंतिम सीढ़ी पर पहुँचा तो अटैची वाला हाथ हवा में लहरा गया और मैं मय अटैची के नीचे गिरा। मुझे बिलकुल चोट नहीं आई। पहला विचार यही आया कि यदि गलत एंगल से गिरता और दुर्घटनाग्रस्त हो जाता तो पत्नि बच्चों को कैसे संभालती और कैसे मुझे? क्या इसे ईश्वरीय सहायता के अतिरिक्त, कुछ कहा जा सकता है?

(दो) भानजे ज्योति के साथ उसकी स्टेण्डर्ड गाड़ी (बहुत छोटी) में ग्वालियर से मण्डी हिमाचल जा रहे थे। गाड़ी अच्छी स्पीड पर दौड़ रही थी, होडल पास में ही था कि ज्योति को स्टीरियों में कैसेट चेन्ज करने के लिए झुकना पड़ा। वह झुका और मुझे पेड़ों की हरियाली दिखाई देने लगी। मैं चीख उठा ज्योति, ज्योति और ज्योति ने जो स्टीयरिंग काटा तो गाड़ी हाइवे पार कर नीचे झाड़ियों में रेत में घुस गई। पत्नि पिछली सीट पर थी और भैया अभी गर्भ में ही था। किसी को कोई चोट नहीं आई। दुर्घटना का असर आज भी गहरा है।

(तीन) 11 फरवरी 2014 को ब्रेन हेमरेज का पहला अटैक हुआ। तीन दिन आई.सी.यू. में रखने के बाद डॉक्टरों का निर्णय हुआ कि रक्त का थक्का घुल गया है और मुझे अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। 23 को फिर तबियत बिगड़ने लगी। दोपहर का खाना 4 बजे खाया। घुटने मोड़कर, बाहर की तरफ पैर निकाल कर लेटा रहा। 11 बजे तक पत्नि श्रीमती स्वेदश ने दो-तीन बार खाना खाने के लिए कहा तो मना कर दिया। फिर हाँ, हूँ के अलावा कोई बात नहीं और धीरे-धीरे अचेतावस्था में चला गया। रात 2:30 बजे पत्नि समीपस्थ भानजे को बुला लाई। यही निर्णय हुआ कि सुबह अस्पताल ले चलेंगे।

सुबह पूर्ण बेहोशी की स्थिति में परिवार अस्पताल (प्राइवेट) पहुँचाया गया। डॉक्टरों को बुलाया गया। डॉक्टरों की राय थी कि ब्रेनहेमरेज फिर हो गया है। आवश्यक जाँचों के पश्चात् तत्काल ऑपरेशन कराने की सलाह दी गई। पत्नि ने तत्काल कहा कि आप ऑपरेशन की तैयारी कीजिये। आवश्यक धन में काउण्टर पर जमा करा रही हूँ। सब तैयारी में शाम सात बज गये। सात बजे प्रारंभ हुआ ऑपरेशन साढ़े आठ बजे समाप्त हुआ दूसरे दिन 24 घण्टे के बाद होश आया। दोनों हाथ पलंग से बंध थे। दस दिन बाद घर आया। एक माह तक धार के बाहर जाने की इजाजत भी नहीं थी। टायलेट जाने के लिए भी पत्नि पीछे पीछे चलती थी। डेढ़ माह के बाद मस्तिष्क की धुंध साफ होने लगी। मन में बार-बार यही विचार उठता था कि पत्नि से पूँछू की रात 1 बजे से शाम 8 बजे तक, ऑपरेशन प्रारंभ होने तक, तुम्हारी मनः स्थिति क्या रही। पर ताजा घाव कुरदने का मन नहीं हुआ, हिम्मत नहीं हुई, मन का यह संघर्ष चल ही रहा था कि .....अप्रैल 2014 को वेदमर्मज्ञ पं. शिवनारायण उपाध्याय जी (कोटा) का पत्र मिला। उस पत्र में पण्डितजी ने दुःख प्रकट किया

कि जब आपकी पत्नि मर्मान्तक पीड़ा झेल रही थी तो उन्होंने हमें (पं. जी को) याद क्यों नहीं किया। मुझे अपनी बात करने का मौका मिल गया। मैंने पत्र पढ़कर सुना दिया और पूछा कि जानना चाहता हूँ कि तुम्हारी मानसिक स्थिति कैसी थी? 20 घण्टे से निश्चेत-अवस्था में पड़ा हुआ देखकर क्या विचार आ जा रहे थे। पत्नि ने बिना विलम्ब किये तत्काल कहा कि मुझे ईश्वर का पूरा भरोसा था कि आप बिलकुल ठीक हो जायेंगे। दूसरे मुझे डॉ. उदेनिया, न्यूरोफिजिशियन जो मेरे कार्यालय सहयोगी के सुपुत्र हैं, उन पर भी पूरा भरोसा था कि इलाज में वह कोई कसर नहीं छोड़ेगें। दोनों भरोसे में खरे निकले और आप ठीक है। सवाल यह उठता है कि श्रीमती जी की वैदिक ईश्वर में इतनी प्रबल दृढ़ आस्था न होती तो वह टोने-टोटके, गंडे-ताबीज, साधु-फकीर, मन्नतें, पचास चक्करों में पड़कर, रो-रोकर बुरा हाल कर देती। ऑपरेशन सायं 7:00 बजे प्रारंभ हुआ। सबकी वाणी मौन हो गई। पत्नि ने इसे सुअवसर समझ कर संध्या कर ली। परिवार व बाहर के सभी परिचित लोग उसके धैर्य, मस्तिष्क पर पूर्ण नियंत्रण रख कर, सभी आवश्यक काम व व्यवस्था का संचालन स्वयं करते हुए देख कर आश्चर्य चकित थे। आज भी हैं। मैं अपनी बात नहीं करता पर श्रीमती की बात सुन कर, समझ कर आश्चर्य चकित होता हूँ। स्वयं से ही पूछता हूं कि क्या मैं ऐसा कर पाता? ईश्वर के प्रति एकान्त निष्ठा व कर्त्तव्य के प्रति जागरूकता ईश्वर कृपा का ही फल है, ऐसा मेरा मानना है और यही पत्नि श्रीमती स्वदेश ने करके दिखलाया। कर्त्तव्य-कर्म, पूर्ण विचार के बाद स्थिर करना यदि ईश्वर में आस्था का परिणाम नहीं है तो और क्या है?

अन्य घटनाओं से लेख का कलेवर नहीं बढ़ाना चहाता। महर्षि मानते है कि ईश्वर सहायता करता है पर कब? जब पूर्ण पुरुषार्थ करने पर भी किसी कठिन समस्या का निराकरण न हो रहा है, तभी प्रार्थना करने पर वह अवश्यमेव सहायता करता है। कोई हल सुझाता है। किसी मित्र, सगे-संबंधित को भेज देता है। कोई न कोई ऐसा बाना बना देता है, जिससे आपका काम बन जाए और काम न होने वाला हो तो संतोष प्रदान करता है। बस जरूरत है धैर्य की और विश्वास की। उस पर विश्वास की कमी ही हमें इधर-उधर भटकाती है और यही कमजोरी अमरनाथ, तिरूपति बालाजी, सोमनाथ जी व वैष्णोदवी व शिरडी आदि अन्य अनेक तीर्थों पर भटकन का कारण है। मैं इसे आस्था की पूर्ति हेतु यात्रा नहीं मान सकूँगा क्योंकि आस्था भटकाती नहीं, आश्रय देती है।

– से.न. वरिष्ठ लेखाधिकारी (केन्द्र), 22, नगरनिगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर म.प्र., दूरभाष 9303448441

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं–

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. बाल कल्याण सदन के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. बाल कल्याण सदन के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 2500/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं।

कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें।

धन्यवाद! –व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 01276-230195, 9416054195

सर्वगुण सम्पन्न श्री रामचन्द्र जी का जीवन-चरित्र

-राजवीर सिंह आर्य, बहादुरगढ़

गतांक से आगे

रावण की आज्ञा अनुसार राक्षसियों ने सीता को साम-दाम-दण्ड और भेद की नीति अनुसार तरह-तरह के प्रलोभन व भय दिखाये। उन्होंने यह भी कहा राज्य से भ्रष्ट और अर्थहीन राम से अपना मन हटाकर रावण को अपना भर्ता बना। राक्षसियों के इस प्रकार के वचन सुनकर सीता उनसे बोली ''तुम सब मिलकर मुझे जो लोकनिन्दित वाक्य कहती हो उसे मैं मन में भी स्थान नहीं दे सकती। चाहे तुम मुझे मार डालो।'' बहुत ही दुःखी सीता जोर-जोर से राम-लक्ष्मण अपनी सास कौशल्या व सुमित्रा को पुकारने लगी और कहने लगी'' मैं अब राम को नहीं पा सकूंगी, धिक्कार हैं, मनुष्यपन को और धिक्कार है पराधीनता को जो अपनी इच्छा से जीवन भी नहीं त्याग सकता। निःसंदेह यह मेरा हृदय पत्थर का बना हुआ है जो इतने महान दुःख से भी नहीं फट रहा। मुझे तो सन्देह है कि कहीं छल से इस दुष्ट रावण ने उन दोनों भाईयों को ही ना मरवा दिया हो।'' इस प्रकार कथन करते हुए सीता जोर-जोर से विलाप करने लगी और अपने प्राणों को त्यागने का निश्चय करने लगी। उस बड़े वृक्ष पर बैठा हुआ हनुमान यह सब सुन व देख रहा था। उसके मन में विचार आया कि यद्यपि सीता को मैंने खोज लिया है। लेकिन सीता की मनोदशा काफी गम्भीर है। अगर मैं इससे मिले बिना चला जाऊँगा तो इसके जीवित रहने में संदेह है। इसीलिए इस प्रकार मेरा जाना दोषयुक्त होगा। मुझे ऐसे अवसर की खोज में रहना होगा जब यह राक्षसियां सीता से कुछ दूर चली जायें और सीता भी मुझे देखकर भयभीत ना हो। ऐसा ही एक अवसर प्राप्त होने पर महामना हनुमान सीता को सुनाई देने वाले मधुर स्वर से यह वाक्य बोला कि ''ईक्शवाकुओं के राजा दशरथ जो महान कीर्तिवान तथा महातेजस्वी थे, उनका प्रिय ज्येष्ठ पुत्र चन्द्रतुल्य मुख वाला, सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ, जीव लोक की रक्षा करने वाला, धर्म रक्षक, शत्रुओं का दमन करने वाला, सत्य प्रतिज्ञ, अपने वृद्ध पिता की आज्ञा अनुसार अपनी भार्या तथा भाई सहित वन में आया हुआ था। जहां उसने जन स्थान पर खर-दूषण सहित राक्षसों को मार गिराया, जिससे क्रोधित होकर रावण उनकी भार्या को छल से हर लाया। अपनी भार्या को ढूंढते हुए उस राम की सुग्रीव नामक एक वानर से मित्रता हुई। राम ने दुरात्मा बाली को मारकर सुग्रीव को राजा बनाया। उन्ही सुग्रीव की आज्ञा अनुसार ही सैकड़ों वानर उस देवी को ढूंढ रहे हैं। जैसी आकृति व चिन्हों वाली स्त्री राम से सुनी थी वह मैंने पा ली है।'' इतना कहकर हनुमान चुप हो गया। इन शब्दों को सुनकर आश्चर्यचकित सीता चारों

दिशाओं व ऊपर नीचे देखने लगी। राम का यशोगान सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुई सीता को हनुमान दिखाई दिया। तब महाबली शीशम के पेड़ से उतर कर सीता के निकट आया और उसने दोनों हाथ जोड़कर सीता को प्रणाम किया और बोला ''हे देवी! राम का सन्देश लेकर मैं उनका दूत बनकर तुम्हारे पास आया हूँ। उन दोनों भाईयों ने तुम्हारे प्रति कुशल कहा है।'' राम और लक्ष्मण की कुशलता सुनने के पश्चात प्रसन्न हुई सीता हनुमान से बोली ''यह लौकिक कहावत मुझे बड़ी सत्य प्रतीत होती है कि जीवित को सौ वर्ष पश्चात् भी सुख प्राप्त होता है।'' लेकिन जैसे हनुमान सीता के अत्यन्त निकट आया तो सीता को लगा कि कहीं यह मायावी रावण तो नहीं ऐसा सोचकर सीता फिर रोने लगती। सीता की मनोदशा देखकर हनुमान अत्यन्त दुःख को प्राप्त हुआ और सीता को निश्चय कराने के लिए उसने अपना पूरा परिचय दिया और राम द्वारा दी हुई अंगूठी को दिखाया। जिसे देखकर सीता अति प्रसन्न हुई हनुमान से बोली ''हे वानर श्रेष्ठ, तू बड़ा पराक्रमी, समर्थ और बुद्धिमान है। हे प्रशंसा के योग्य हनुमान, सौ योजन लम्बे

सम्पर्क करें

पारिवारिक अनुचित व्यवहारों से उत्पन्न मानसिक उद्विग्नता, वैमनस्य, ईर्ष्याद्वेष आदि में मनोवैज्ञानिक समाधान, वेद, दर्शन, उपनिषद गीता आदि साहित्य पर सुबोध व युक्ति पूर्ण प्रवचन वैदिक-यज्ञ तथा प्रभावोत्पादक ध्यान-योग साधना शिविरों हेतु सम्पर्क करें :

राजहंस मैत्रेय, मो. 9813754084

फर्रूखनगर आश्रम में आयोजित 7वां स्थापना दिवस की सुन्दर झलकियां

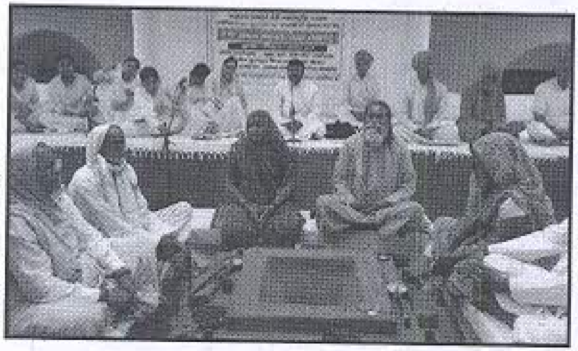

फर्रूखनगर आश्रम में आयोजित 7वां स्थापना दिवस की सुन्दर झलकियां

फर्रूखनगर आश्रम में आयोजित 7वां स्थापना दिवस की सुन्दर झलकियां

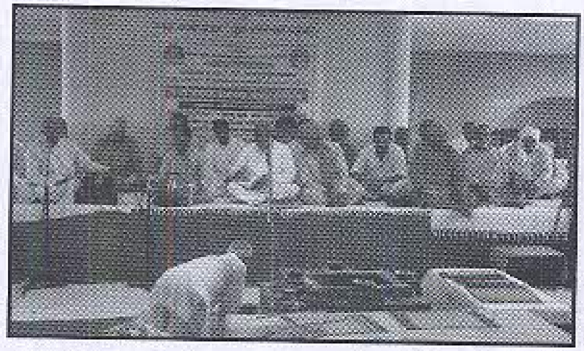

फर्रूखनगर आश्रम में आयोजित 7वां स्थापना दिवस की सुन्दर झलकियां

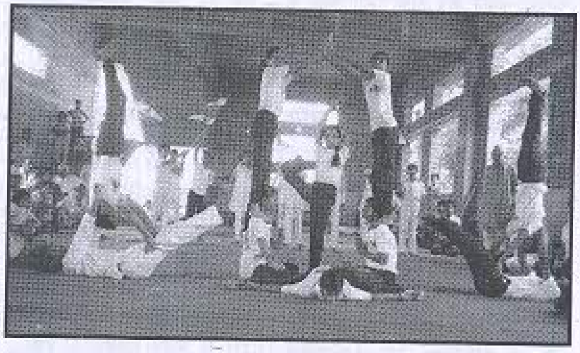

समुद्र को लांघकर तूने इसे गाव के खुर के समान कर दिया। हे बुद्धिमान! मैं तुझे साधारण नहीं समझती। क्योंकि तुझे तो रावण का भी भय नहीं। बड़े भाग्य की बात है कि सत्य प्रतिज्ञ राम और सुमित्रा नन्दन महातेजस्वी लक्ष्मण कुशलपूर्वक हैं। हे हनुमान! क्या वे दानों भाई इस रावण की लंका को जला उसे मार मुझे प्राप्त करने आयेंगे? क्या राघव मुझे इस विपत्ति से शीघ्र ही छुड़वायेंगे? सीता के इस प्रकार सुनने के पश्चात हनुमान सीता से बोला।

टिप्पणी- यहां महाबली हनुमान की बुद्धिमता का और उसके पराक्रम का आभास होता है। भय नाम की वस्तु को वह महावीर जानता भी नहीं था। स्वयं सीताजी भी उसके सामर्थ्य, बुद्धि और बल की प्रशंसा करते हुए कहती है कि हे श्रेष्ठ हनुमान, मैं तुम्हे साधारण नहीं समझती हूँ। (देखिए सुन्दरकाण्ड 17 सर्ग श्लोक 25, 26, 27) अब आप ही विचारिए कि ऐसा बुद्धिमान, निर्भय एवं बलशाली व्यक्ति एक बन्दर कैसे हो सकता है? कल्पना कीजिए कि लंका में जाना, राक्षसों से छिपकर अपना कार्य करना और फिर विचार से सीता की खोज करना कितना दुष्कर कार्य था। लेकिन शूरवीर और बुद्धिमान पुरुष आसमान को भी झुका लेते हैं। यह कहावत हनुमान के लिए सत्य सिद्ध होती है। हनुमान को देखकर एक बार तो सीता इसको रावण की ही माया समझ रही थी लेकिन यह तो हनुमान ही था जिसने सीता को बात करने के लिए अपने विश्वास में ले लिया। सीता राम और लक्ष्मण की कुशलता भी बार-बार पूछती है और कहती है कि उनका प्रेम मेरे प्रति कम तो नहीं हो गया? तब हनुमान, रामचन्द्र जी किस तरह से उन्हें स्मरण करते हुए व्याकुल हो जाते हैं आदि आदि प्रेम भरी बातें बता करके सीताजी को उत्साहित करते है और कहतें हैं कि धैर्य धारण किए रखना श्रीराम चन्द्र जी शीघ्र ही सुग्रीव की सेना के साथ रावण को वध करके आपको ग्रहण करेंगे। यहां भरत का वर्णन भी आया है कि क्या रामचन्द्र के छोटे भाई भरत भी अपनी विशाल सेना लेकर आयेंगे? इस विषय में हनुमान मौन ही धारण किए रहता है जिससे सीता का मानसिक बल बना रहे। जब मेरे द्वारा यह लेख लिखा जा रहा था तो उसी समय मैंने दैनिक भास्कर अखबार में एक समाचार पढ़ा कि कार से एक दम्पति साल्हावास की तरफ जा रहे थे तो रास्ते में नहर के पास महिला ने लघुशंका होने के कारण अपने पति से गाड़ी रोकने के लिए कहा। गाड़ी से नीचे उतरकर वह महिला थोड़ी ही दूर गई थी कि वहां पेड़ पर बैठे हुए बंदरों ने उस पर आक्रमण कर दिया। वह अपने बचाव के लिए भागी तो संतुलन बिगड़ने के कारण नहर में जा गिरी और तेज पानी में बह गई। लाश भी काफी आगे बड़ी मुश्किल से प्राप्त हुई। मैंने सोचा कि कैसी विचित्र बुद्धि है हमारी एक हनुमान जिसको हम बन्दर मानते हैं वह शीशम के पेड़ पर बैठा एक स्त्री का विलाप सुनकर उसकी उपवासों से दुर्बल हुई काया को देखकर और यह सोचकर कि इतने बड़े सम्राट की पत्नी कैसे मैले कुचेले वस्त्र धारण किए हैं। आंखो से गंगा-यमुना बह रही है और मन ही मन सोच रहा है कि अगर मर्यादा में न बंधा हुआ होता तो उस दुष्ट को अभी मारकर माता सीता को अपनी पीठ पर बिठा अति शीघ्र इसे इसके भर्ता श्रीराम चन्द्र से मिलवा देता। लेकिन हम अन्य विषयों की गहराई तक नहीं पहुंचते। धार्मिक और ऐतिहासिक विषयों की गहराई तक तो जा पहुंचते हैं परन्तु धार्मिक और ऐतिहासिक विषयों पर हम धर्मान्ध ही बने रहना चाहते हैं। इस पर बिल्कुल भी चिन्तन नहीं करते है जिससे हानि ही होती है। एक सज्जन एक आर्य पत्रिका में लिखते हैं कि धर्म आस्था का विषय है विज्ञान का नहीं। उनके लेख को पढ़कर जहां आश्चर्य होता है वहां दुःख भी हुआ है। क्योंकि लेखक के हिसाब से मान लेना चाहिए कि गणेश ने दूध पिया तो पिया इस पर विज्ञान का अडंगा मत अडाइए। वाह क्या आइडिया है!

साधकों के लिए स्वर्णिम अवसर

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर गुड़गांव में दूषित वातावरण से दूर सुरम्य स्थान पर आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित शौचालय, रसोई स्नानगृह आदि से युक्त योग-साधकों की साधना के लिए बाहर एवं भूमिगत कमरे उपलब्ध हैं। आप सादर आमन्त्रित हैं।

कृपया सम्पर्क करें:- 9416054195, 9812640989, 9813754084

हम ऋषि दयानन्द की जय बोलने के सच्चे अधिकारी कब बन सकेंगे?

- कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा

हम लोग बड़े भाग्यशाली है जिन्हें गुरु के रूप में महर्षि दयानन्द जैसा तपस्वी ऋषि मिला। वह एक ऐसा मार्गदर्शक था, जिसके सम्मुख सभी गुरु ऐसे विलुप्त होते चले गये जैसे सूर्य उदय होने पर चांद एवं नक्षत्रों की ज्योति धूमिल हो जाती है। उन्होंने अपने अपार तप एवं तपस्या के बल पर वेद रूपी वाणी हमें प्रदान की, जिसे पूरा मानव जगत पढ़ सकता है, पढ़ा सकता है। ''स्त्री शूद्रो नऽधीयताम्'' स्त्री और शूद्रों को वेद पढ़ने का कोई अधिकार नहीं वाली वार्ता को परिवर्तित करते हुए यह सिद्ध कर दिखाया कि वेद का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का न केवल धर्म अपितु परम धर्म बताया। आर्य समाज ने न जाने कितने ही अनुसूचित एवं जनजाति युवकों को वेद ज्ञान देकर पंडित बनने का गौरव प्रदान किया। आज जगह-जगह वेदों मन्त्रों के गान से यज्ञाग्नि प्रज्वलित हो रही है। महर्षि दयानन्द के महान आन्दोलन ने आज पौराणिक जगत में एक खलबली मचा दी है। आज उन हरिजनों को मन्दिरों में जाने का अधिकार दिलाया, उन्हें यज्ञोपवीत पहनाये और वेद पढ़ने का अधिकार दिया। महर्षि दयानन्द समाज के इस उपेक्षित वर्ग के मसीहा बन कर आये। संसार का एक भी सुधारक ऐसा नहीं जिसने समाज को ऊंचा उठाने के लिए विष के प्याले पिये हो, पत्थर खाये हों, अपमान के कड़वे घूंट पीये हों और फिर भी मानव जाति को अमृत पिलाया हो। फिर भी यदि आज मानव जाति उनके उपकार को नहीं मानती तो यह उसकी कृतध्नता होगी।

महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में जो भी आया वह कृतकृत्य हो गया। चाहे वह श्रद्धानन्द हो या लेखराम, गुरुदत्त हो व हंस राज। सभी सोने के रूप में दयानन्द के सम्पर्क में आते गये और कुन्दन बन कर निकलते गये। परन्तु आज हम उनके उत्तराधिकारी क्या उस ओर बढ़ रहे हैं? यदि नहीं तो क्यों? आर्यो। सोचो। विचारो। अपनी अर्न्तात्मा में झांको। मैं भी झांकू, तुम भी झांको हम सभी झांके, तभी तो हम ऋषि के ऋण से उऋण हो सकेंगे। परन्तु दुर्भाग्य यह है हम दूसरों के दोषों को देखना चाहते हैं, परन्तु अपने नहीं। आइये, आज से हम यह निर्णय लें कि दूसरों के दोष देखने की बजाये अपने दोष देखने प्रारम्भ करेंगे।

कन्हैया लाल आर्य

आज धर्म घट रहा है। पाप और पाखण्ड बढ़ रहा है। आज कथा, प्रवचन, सत्संग मात्र धार्मिक मनोरंजन बन कर रह गये हैं। परन्तु कभी आपने सोचा कि इन सब आडम्बरों से क्या आप की शान्ति मिलने वाली है। हम भीड़ जुटाने में लगे हैं हर तथा कथित गुरु अपने नाम के बड़े बड़े बैनर, चित्र इत्यादि लगवा कर अपनी प्रसिद्धि करा रहा है। उसे धर्म, कर्म से कोई वास्ता नहीं। बड़े-बड़े मंच सजाये जा रहे हैं। परन्तु सोचो! इनका जरा भी स्थायी प्रभाव जनता पर पड़ रहा है। एक भीड़ जो विवेक शून्य एवं ज्ञान शून्य है उसे वह तथा कथित गुरु ताली बजवा कर सिर हिलवा कर, कथा के बीच खड़े होकर ठुमके लगवाकर जो असभ्यता का परिचय देकर, धर्मप्रचार का नाम दिया जाता है क्या यही धर्म है? क्या इसे सत्संग कहोगे? जिस प्रकार फिल्मी नायक लोगों को विभिन्न मुद्राओं को दिखाकर मूर्ख बनाता है। उसी प्रकार आज कल यह तथा कथित धर्म गुरु लोगों को मूर्ख बना रहे हैं। परन्तु मैं इन्हें दोषी नहीं ठहराता। वह तो व्यापारी है उन्हें तो व्यापार करना है। परन्तु महर्षि स्वामी दयानन्द के उत्तराधिकारी आर्यो। सोचो! क्या यह आडम्बर, पाखण्ड एवं ढोंग हमारी अकमर्ण्यता के कारण नहीं हो रहा है जब से हम ने आर्य समाज के प्रचार, प्रसार करने की बजाय फोटो खिंचवाना, नेताओं के स्वागत करना और कुछ भजन संध्या करा देना ही आर्य समाज के उत्सव का उद्देश्य बना लिया है। तभी यह सब कुछ हो रहा है। वैदिक प्रचार एवं प्रसार लुप्त हो रहा

है। तभी तो आज तथा कथित धर्म गुरु कूड़ा करकट बेच रहे हैं। क्योंकि वह दुकान अपनी ऊँची लगाकर अपना कूड़ा करकट बहुत महंगे दामों पर बेच रहे हैं और हम बढ़िया दुकानदार होते हुए अच्छा माल रखते हुए भी अपने वेद रूपी माल को लोगों के गले नहीं उतार रहे हैं। आईये आज हम इस विषय पर सोचें।

आज दु:खद पीड़ा यह है कि आज के आर्य समाजी वेद प्रचार के कार्य को प्रमुखता की बजाय विद्यालयों, औषधालयों, दुकानों, मैरिज ब्यूरो आदि चलाने में अधिक रूचि दिखा रहे हैं। यह कार्य तो कोई भी संस्था कर सकती है। परन्तु वेद प्रचार का कार्य केवल आर्य समाज ही कर सकता है। अत: आर्य समाजी बन्धुओं! यदि हम वास्तव में महर्षि दयानन्द के उपकारों को मानते हैं उनके ऋण से उऋण होना चाहते हो तो इन दूसरे कर्मों को प्रमुखता देने की बजाय वेद प्रचार को प्रमुखता दें, तभी हम महर्षि स्वामी दयानन्द को वेदों वाला कहने के अधिकारी हो सकेंगे। मैं ऐसा मानता हूं कि विश्व में एक आर्य समाज ही ऐसी संस्था है जो उच्च स्वर से कहता है कि वेद की ज्योति जलती रहे। फिर यह कैसे जलेगी? इन विद्यालयों, औषधालयों, बारातघरों के चलाने से नहीं बल्कि वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं प्रसार से जलती रहेगी। अत: आर्यो उठो! जागो! और आज से एक प्रण लो कि आज हम विवादों, झगड़ों, कुर्सियों के लोभ को तिलांजलि देकर महर्षि दयानन्द के स्वप्न वेद के प्रचार और प्रसार में अपनी पूरी शक्ति जुटा देंगे। यदि हम ऐसा कर सके तो हम महर्षि दयानन्द की जय बुलाने के सच्चे अधिकारी बन सकेंगे।

– 4/45 शिवाजी नगर, गुड़गांव, हरियाणा, मो. 09911197073

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं–

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

श्री चन्द्रभान चौधरी (पूर्व डी.सी.पी.) द्वारा एकत्रित दान राशि

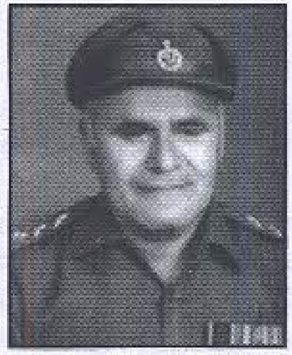

साहस एवं समर्पण के ज्वलन्त उदाहरण

श्री चन्द्रभान जी चौधरी पुलिस विभाग से डी.सी.पी. के पद से सेवानिवृत हुए। इस विभाग में कार्यरत रहते हुए भी उनकी छवि निष्कलंक रही, यही कारण है कि आपको राष्ट्रपति पुलिस पदक और पश्चिम स्टार, स्पैशल ड्यूटी पुलिस पदक से सम्मानित किया गया। यह अन्यों के लिए भी अनुकरणीय है।

राष्ट्रसेवा, लोगों के कष्ट निवारण के चौधरी चन्द्रभान जी प्रतिबद्ध ही नहीं रहे, अपितु कटिबद्ध भी रहे, राष्ट्र के प्रति उनकी निष्ठा एक ऐसे व्यक्ति के रूप में उन्हें प्रतिष्ठा दी गयी, जो-प्रलोभन के आगे कभी झुका नहीं और अपनी कर्त्तव्यपरायणात के वर्ग को इतना गतिशील रखा, वह कभी रूका नहीं।

चौधरी चन्द्रभान जी में विनम्रता है, परन्तु दैन्य नहीं। इनमें एक विचित्र सादगी भरा सौजन्य है, जिससे आदमी पहली ही मुलाकात में आत्मीय सा अनुभव करने लगता है।

श्रीमती सलोचना शर्मा जी जनकपुरी दिल्ली	1100/-
श्रीमती गांधारकलां जी राजपाल पश्चिम विहार, दिल्ली	500/-
श्रीमती सुभाषनी आर्या जी पश्चिम विहार नई दिल्ली-63	250/-
डॉ. पुष्पलता वर्मा, विकासपुरी, नई दिल्ली	150/-
श्रीमती प्रवीण मेहन्दीरत्ता, विकासपुरी, दिल्ली	150/-
श्री सेठी परिवार, विकासपुरी, नई दिल्ली	100/-
श्री एच.पी. खंडेलवाल विकासपुरी, नई दिल्ली	100/-
फर्रूखनगर आश्रम के लिए	
श्रीमती गांधार कला जी राजपाल पश्चिम विहार, दिल्ली	500/-
श्रीमती सुभाषनी आर्या जी पश्चिम विहार, नई दिल्ली	500/-

अजवायन गुणधर्म और लाभ

भारत वर्ष में अजवायन का प्रयोग औषधि के रूप में बहुत प्राचीन काल से हो रहा है। प्रसव के बाद स्त्री को इसका विशेष रूप से सेवन कराया जाता है, इससे अन्न का पाचन ठीक होता है, भूख अच्छी लगती है, गर्भाशय की शुद्धि एवं पीड़ा दूर होती है। प्रसव के पश्चात इसके चूर्ण की पोटली बना योनि में रखने से या इसके क्वाथ से योनि का प्रक्षालन करने से गर्भाशय में दुर्गन्ध युक्त जलस्राव एवं गर्भाशय में कीटाणु प्रकोप नहीं हो पाता, पाचक औषधि के रूप में इस बूटी ने बहुत प्रसिद्धि पाई है, अजवायन में चिरायते का कटुपौष्टिक गुण, हींग का वायुनाशक और कालीमिर्च का अग्नि दीपन गुण इसी कारण कहा जाता है। ''एका यवानी शतमन्नापचिका'' अर्थात् अकेली अजवायन ही सैकड़ों प्रकार के अन्न को पचाने में सक्षम है। दूध यदि ठीक न पचता हो तो दूध पीकर ऊपर से थोड़ी अजवायन खा लेनी चाहिए। यदि गेहूं का आटा, मिष्ठान आदि न

पचता हो तो इसमें इस चूर्ण को मिलाकर खाना चाहिए। शरीर में कहीं पर भी वेदना होती हो तो इसे पानी में पीसकर लेप करें और ऊपर से धीरे-धीरे सेक दें। अजवायन को आग पर डाल कर उसकी धूप को धूपित करने से, अंगदर्द दूर होकर पसीना आता है एवं देह की शुद्धि हो जाती है।

बाहय स्वरूप: इसका शाखा-प्रशाखा युक्त, चिकना या किंचित मृदुरोमश: पत्रमय क्षुप एक से तीन फीट ऊँचा होता है, कष्ट धारीदार होता है, पत्र द्विपक्षवत् या त्रिपक्षवत विभक्त होता है, अन्तिम पत्रखण्ड आधे से एक इंच लम्बे, रेखाकार होते है। पुष्प-छत्राकार, श्वेत संयुक्त छत्रकों में होते है।

फल 1/12 इंच लम्बे, अण्डाकार, धूसर-भरे रंग के सूक्ष्म, कंटकित या रोमश होते है तथा पांच स्पष्ट रेखाओं से युक्त होने के कारण पंचकोणीय प्रतीत होते है फल के एक बीजी दोनों खण्ड कुछ दबे होते हैं। प्रत्येक खण्ड में एक बीज होता है। मूल-मूलाकार होती है। फरवरी-अप्रैल में पुष्प और उसके बाद इसमें फल लगते हैं।

रासायनिक संगठन: इसके अन्दर एक प्रकार का सुगन्धित उड़नशील द्रव्य होता है, जिसे अजवायन का फूल सत तथा अंग्रेजी में थायमोल कहते हैं। अजवायन को पानी में भिगोकर भाप के द्वारा इसका सत निकाला जाता है।

गुण-धर्म: दीपन, पाचन, वातानुलोमन, शूलप्रशमन, जीवाणु नाशक, गर्भाशय उत्तेजक, उदर कृमिनाशक (अंकुशमुख कृमि पर विशिष्ट घातक क्रिया), पित्त-वर्धक, शुक्रनाशक, स्तन्यनाशन, कफवातशामक, ज्वरघ्न, शीतप्रशमन, वेदनास्थापन तथा शोथहर है।

औषधीय प्रयोग

प्रतिश्याय व शिरः शूल

1. 200 से 250 ग्राम अजवायन को गरम कर मलमल के कपड़े में बांधकर पोटली बनाकर तवे पर गर्म करके सूंघने से छींके आकर जुकाम व प्रतिश्याय का वेग कम होता है।

2. अजवायन को साफ कर महीन चूर्ण बना लें, इस चूर्ण को 2 से 5 ग्राम की मात्रा में नस्वार की तरह सूंघने से जुकाम, सिर की पीड़ा, कफ का नासिका में रूक जाना एवं मस्तिष्क के कृमि में लाभ होता है।

खांसी: 1. इसके चूर्ण की 2 से 3 ग्राम मात्रा को गर्म पानी या गर्म दूध के साथ दिन में दो या तीन बार लेने से भी जुकाम, सिरदर्द, नजला, मस्तकशूल, कृमि पर लाभ होता है।

2. कफ अधिक गिरता हो, बार-बार खांसी चलती हो-ऐसी दशा में अजवायन का सत् 125 मिलीग्राम घी 2 ग्राम और शहद 5 ग्राम में मिलाकर दिन में 3 बार खाने से कफोत्पत्ति कम होकर खांसी में लाभ होता है।

3. खांसी तथा कफ ज्वर में अजवायन 2 ग्राम, छोटी पिप्पली 1/2 ग्राम, का क्वाथ बनाकर 5 से 10 ग्राम की मात्रा में सेवन करने से लाभ होता है।

4. खांसी में 1 ग्राम अजवायन रात्रि में सोते समय मुलेठी 2 ग्राम, चित्रकमूल 1 ग्राम से निर्मित काढ़े को गर्म पानी के साथ सेवन करें।

5. पांच ग्राम अजवायन को, 250 ग्राम पानी में पकायें, आधा शेष रहने पर, छानकर नमक मिला रात्रि को सोते समय पी लें।

6. खांसी पुरानी हो गई हो, पीला दुर्गन्धमय कफ गिरता हो और पाचन क्रिया मन्द पड़ गई हो तो

अजवायन का अर्क दिन में 3 बार 25 ग्राम की मात्रा में पिलाने से लाभ होता है।

सिर की जुऐं: 10 ग्राम अजवायन चूर्ण में 5 ग्राम फिटकरी मिला, दही या छाछ में मिलाकर बालों में मलने से लीखें, जुएं मर जाती है।

कर्णशूल: 10 ग्राम अजवायन को 50 ग्राम तिल तैल में पकाकर सहने योग्य उष्ण तैल को 2-2 बूँद कान में डालने से कान की वेदना मिटती है।

उदरकृमि: 1. स्वच्छ अजवायन के महीन चूर्ण को 3 ग्राम की मात्रा में दिन में दो बार छाछ के साथ सेवन करने से उदर के कृमियों का समूल नाश हो जाता है।

2. अजवायन के 2 ग्राम चूर्ण को समान भाग नमक के साथ प्रातः काल सेवन करने से अजीर्ण आमवात तथा कृमिजन्य रोग, आध्मान, शूल आदि शान्त होता है।

3. उदर में जो हुकवर्म नामक कृमि होते हैं, उनका नाश करने के लिए अजवायन का सत् 125-500 मिलीग्राम तक खाली पेट 1-1 घंटे के अंतर में 3 बार देने से और मामूली जुलाब (अरंडी तैल नहीं दें) देने से सब कृमि निकल जाते हैं। यह प्रयोग, पाडुंरोगी, निर्बल और सगर्भा पर नहीं करना चाहिए।

4. अजवायन के 500 मिलीग्राम चूर्ण में, समभाग काला नमक मिली, रात्रि के समय रोज गरम जल से देते रहने से बालकों का कृमि रोग दूर हो जाता है। कृमिरोग में पत्तों का 5 मिलीलीटर स्वरस भी लाभकारी है।

जलोदर: 1. गाय के 1 किलो मूत्र में अजवायन लगभग 200 ग्राम को भिगोकर सुखा लें, इसको थोड़ी-थोड़ी मात्रा में गौ-मूत्र के साथ खाने से जलोदर मिटता है।

2. यही अजवायन जल के साथ खाने से पेट की गुड़गुडाहट और खट्टी डकारें आना बन्द हो जाती है।

3. अजवायन को बारीक पीसकर उसमें थोड़ी मात्रा में हींग मिलाकर लेप बनाकर पेट पर लगाने से जलोदर एवं पेट के अफारे में सद्य लाभ होता है।

अमृतधारा: पोदीने का सत या फूल 10 ग्राम, सत् अजवायन 10 ग्राम, देसी कपूर 10 ग्राम तीनों को एक साफ शीशी में डालकर अच्छी प्रकार से डाट लगाकर ध ूप में रखें। थोड़ी देर में तीनों चीजों का गलकर पानी बन जायेगा। यह एक दवा अनेक बीमारियों में काम आती है। (इसको आँशिक रूप से परिवर्तित कर हम आश्रम में दिव्यधारा के नाम से निर्मित करते हैं।)

सर्दी-जुकाम: सर्दी-जुकाम में 3-4 बूंद दिव्यधारा रूमाल में डालकर सूंघने से या 8-10 बूंद गर्मपानी में डालकर भाप लेने से तुरन्त लाभ होता है।

उल्टी दस्त: अमृत धारा की 4-5 बूंदे बतासे में या गरम जल में डालकर आवश्यकतानुसार देने से तुरन्त लाभ होता है। एक बार में लाभ न हो तो थोड़ी-थोड़ी देर में 2-3 बार दे सकते हैं।

हैजा: हैजे में 4-5 बूँद अमृतधारा की विशेष रूप से गुणकारी है। अमृतधारा, को हैजे की प्रारम्भिक अवस्था में देने से तुरन्त लाभ होता है। एक बार में आराम न हो तो 15-15 मिनट के अन्तर से 2-3 बार दे सकते हैं। इसके प्रयोग से हैजे के सैकड़ों बीमार बच गये हैं।

अतिसार: मरोड़ चलना, पेट दर्द, श्वास, गोला, उल्टी आदि बीमारियों में भी 5-7 बूँद अमृतधारा बतासे में देने से तुरन्त लाभ होता है।

कीट दंश: बिच्छु, ततैया, भंवरी, मधुमक्खी इत्यादि जहरीले कीटों के दंश पर भी अमृत धारा को लगाने से शान्ति मिलती है। पत्तों को कुचल कर भी बाँध दिया जाता है।

उदर विकार, मंदाग्नि, अम्लपित व शूलः

1. 3 ग्राम अजवायन में 1/2 ग्राम काला नमक मिलाकर गरम जल के साथ फंकी लेने से अफारा मिटता है। इस चूर्ण को दोनों समय फंकी लेने से वायु गोले का नाश होता है।

2. अजवायन, सैंधा नमक, हरड और सौंठ के चूर्ण को समभाग मिश्रित कर, 1 ग्राम से 2 ग्राम की मात्रा में गर्म पानी के साथ सेवन करने से उदर शूल नष्ट होता है, इस चूर्ण के साथ वचा, सोंठ, काली मिर्च, पिपल्ली 100 ग्राम जल में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ के साथ गरम-गरम ही रात्रि में पीने से कफ व गुल्म नष्ट होता है।

3. प्रसुता स्त्रियों को अजवायन के लड्डू और भोजन के बाद अजवायन 2 ग्राम की फंकी देनी चाहिए, इससे आंतो के कीड़े मरते है, पाचन होता है और भूख अच्छी लगती है एवं प्रसूत रोग से बचाव होता है।

- क्रमशः

निश्रेयस-अभ्युदय की जननी प्राचीन भारतीय समाज

- डॉ. बाबु राम ज्ञवाली

आधुनिक अर्थशास्त्र में दो विपरीत आर्थिक शक्तियों के समायोजन को सन्तुलन कहा जाता है। ब्रिटिश अर्थशास्त्री अलफ्रेड मार्शल ने मांग और पूर्ति के सन्तुलन की अवधारण प्रतिपादित की थी जिसको आजकल आंशिक सन्तुलन कहा जाता है। अर्थशास्त्री लियुन वालरस ने इस धारणा को जरा और विकसित किया और कहा कि एक व्यक्ति जिन सम्पूर्ण वस्तु और सेवाओं का उपभोग करता है वे भी परस्पर निर्भर होती हैं। इसी को सामान्य सन्तुलन कहा जाता है।

सामाजिक व्यक्ति के जीवन में समाज के सारे व्यक्तियों की क्रियाएं प्रभाव डालती हैं और खुद उसकी क्रियाएं भी अन्य सभी को प्रभावित करती है। इसीलिए पेरिटो ने समाज के सभी व्यक्तियों के हितों को ध्यान में रखते हुए सामान्य सन्तुलन की अवस्थाओं की व्याख्या की है। सरलतम शब्दों में पेरिटो आदर्श को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है-जब सभी व्यक्ति एक दूसरे के क्रियाकलाप के आधार पर पूर्णतया सन्तुलन में हो-अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त कर रहे हों, तो वह पेरिटो आदर्श की अवस्था होती है। इस अवस्था में किसी एक की सन्तुष्टि कम किए बिना दूसरे की सन्तुष्टि को बढ़ाया नहीं जा सकता। त्रिवर्ग सेना के सामान्य सन्तुलन को भी पेरिटो शब्दावली या वालरस के सामान्य सन्तुलन की भाषा में इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है-त्रिवर्ग सन्तुलन का अर्थ यह है कि जब कोई व्यक्ति सन्तुलन में होता है, उस अवस्था में किसी एक चल राशि को बढ़ाने से व्यक्ति की सन्तुष्टि में किसी प्रकार कमी न हो तो उस अवस्था को पेरिटो आदर्श कहा जा सकता है। यदि यह शर्त पूरी नहीं होती तो वह अवस्था पेरिटो सन्तुलन नहीं कही जाएगी। इस अवस्था को ही सामान्य सन्तुलन भी कहा जाता है।

सूक्ष्म विश्लेषण करने पर मालूम होता है कि पूर्वीय चिन्तकों द्वारा बताया गया यह त्रिवर्ग ही वास्तविक सामान्य सन्तुलन है। अर्थशास्त्र में व्याख्या की जाने वाली अवधारणा में केवल आर्थिक तत्व का समावेश है और उसमें अन्य तत्त्व जानबूझकर छोड़ दिए जाते हैं। सामाजिक मनुष्य का जीवन धर्म, अर्थ और काम तीनों से प्रभावित होता है। केवल कौटिलीय अर्थशास्त्र एवं महाभारत में स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि त्रिवर्ग का सन्तुलित उपयोग सुखदायी है परन्तु काम का अर्थ है कामना या इच्छा। मानवीय इच्छाओं की दो विशेषताएं उल्लेखनीय है-

1. इच्छाएं (कामनाएं) अनन्त हैं और सभी इच्छाएं कभी सन्तुष्ट नहीं की जा सकती।

2. पर उनकी तीव्रता में भिन्नताएं होती है अत: जो सबसे ज्यादा तीव्र आवश्यकता होती है वह पूर्णतया सन्तुष्ट की जा सकती है।

अर्थ की विशेषताओं को निम्नलिखित प्रकार संक्षेपित किया जा सकता है-

1. इच्छाओं की पूर्ति का सबसे महत्वपूर्ण साधन अर्थ (धन) है। अर्थात् इसकी उपयोगिता है।

2. यह दुर्लभ है और इसके वैकल्पिक प्रयोगों से इसकी दुर्लभता और भी बढ़ती है।

धर्म की दो विशेषताएं मुख्य हैं-

1. धर्म प्रत्येक कार्य में शुद्धता को आवश्यक समझता है।

2. मानवीय क्रियाकलाप का उद्देश्य परोपकार होना चाहिए। किसी भी प्रकार समाज के अन्य व्यक्तियों के हितों की हानि न हो।

अर्थ और काम के सन्तुलन को ही आधुनिक अर्थशास्त्र का विषय-वस्तु बनाया जाता है क्योंकि अर्थशास्त्री मानवीय आवश्यकताओं और धन के प्रयोग द्वारा अधिकतम सन्तुष्टि का अध्ययन करते हैं। आधुनिक अर्थशास्त्र की सबसे बड़ी कमजोरी ही यह मानी जाती है कि इसमें मूल्य निर्णय को छोड़ दिया जाता है। आधुनिक पाठ्य पुस्तक में बड़े गर्व के साथ यह कहा जाता है कि इसका उद्देश्य मानवीय सन्तुष्टि का अध्ययन है। चाहे वह सन्तुष्टि सिगरेट पीने से प्राप्त हो या फल-फूल खाने से। ऐसी बातों से बालकों और युवाओं का मानसिक विकास गलत रास्ते की ओर अग्रसर होता है और नैतिक मूल्यों की हानि होती है।

पूर्वीय अर्थशास्त्र या प्राच्य अर्थशास्त्र अधिक विस्तृत है, उसमें केवल अर्थ और काम का ही नहीं वरन् अर्थ, काम तथा धर्म तीनों सन्तुलन समावेश है। धर्म को समावेश करने पर तीन भिन्न प्रकार के सन्तुलन प्राप्त होते हैं-अर्थ और काम का सन्तुलन, धर्म और अर्थ का सन्तुलन तथा

काम और धर्म का सन्तुलन।

धर्म और अर्थ का सन्तुलन, उस सन्तुलन को व्यक्त करता है जब किसी समाज में कोई मनुष्य अपने क्रियाकलाप को उत्कृष्ट तरीके से सम्पन्न करता है। अर्थात् उसके साधन में शुद्धता रहती है और उसके आय अर्जन या खर्च के किसी भी क्रियाकलाप से समाज के अन्य किसी भी व्यक्ति के सन्तुष्टि की जरा भी हानि नहीं होती। प्रत्येक व्यक्ति यह ध्यान में रखे कि जब वह अपनी संतुष्टि बढ़ा रहा हो समाज के किसी भी अन्य व्यक्ति या समूह की की सन्तुष्टि कम न हो। धर्म और काम का सन्तुलन उस अवस्था को व्यक्त करता है जब किसी व्यक्ति की केवल वे आवश्यकताएं सन्तुष्ट होती हैं जो आवश्यक है, उचित हैं और उसके आन्तरिक एवं बाह्य गुणों का विकास करती है। कोई भी अपने अहंकार की तुष्टि के लिए खर्च न कर रहा है। किसी दूसरे को नीचा दिखाने के लिए खर्च न करे अर्थात् यह लक्ष्य निर्धारण में सहायक है।

इस प्रकार वह अवस्था जब अर्थ, काम एवं धर्म तीनों का सन्तुलन हो वह ही सामान्य एवं उत्कृष्टतम सन्तुलन की अवस्था है। यही त्रिवर्ग सन्तुलन है। यही सामान्य सन्तुलन है। तीनों वर्गो के सन्तुलन को चित्र के बीच भाग में दिखाया गया है। इस सन्तुलन में मानव जीवन के आवश्यक सभी पक्ष-धर्म, अर्थ एवं काम समाविष्ट हो जाते हैं। इन तीनों का सन्तुलित उपभोग लोक-परलोक दोनों में सुखदायी है जबकि त्रिवर्ग का असन्तुलित उपयोग दोनों लोकों में दुःखदायी है। महाभारत में त्रिवर्ग सन्तुलन की व्याख्या इन शब्दों में बतायी गयी है-जब मनुष्यों का चित्त निर्मल एवं स्वच्छ होता है, तथा वे धैर्यपूर्वक अर्थार्जन का प्रयास करते हैं। इस अवस्था में उचित काल, कारण और परिस्थिति अनुसार धर्म, अर्थ और काम आपस में मिले हुए प्रतीत होते हैं-कल प्रभवसंस्थासु सज्जन्ते च त्रयस्तदा। अग्नि पुराण में धर्म, अर्थ और काम से सम्बन्ध की तुलना वृक्ष के साथ इस प्रकार की गयी है-इसका मूल धर्म, शाखाएं अर्थ एवं फल काम है। स्पष्टतः अन्तिम लक्ष्य मानव कल्याण ही है।

प्राचीन चिन्तकों ने वर्ण और आश्रम व्यवस्था को सामाजिक आर्थिक जीवन के लिए अनिवार्य माना है। परन्तु ध्यान देने योग्य बात यह है कि वर्णाश्रम व्यवस्था स्वयं में लक्ष्य नहीं है। यह व्यवस्था लक्ष्य है त्रिवर्ग की उपलब्धि। वर्तमन में वर्ण एवं आश्रम व्यवस्था में जो कमजोरियां परिलक्षित होती हैं उसका कारण है यह व्यवस्था अपने दर्शन अनुरूप क्रियान्वित नहीं है। वर्ण व्यवस्था में, आश्रम व्यवस्था में तथा चारों पुरुषार्थ में प्राच्य मनीषियों ने अर्थ पर पर्याप्त बल दिया है। त्रिवर्ग के रूप में उन्होंने जिस सामान्य सन्तुलन की व्याख्या की है उसको आधुनिक अर्थशास्त्र की पाठ्य पुस्तकों में उचित सम्मान देना आधुनिक अर्थशास्त्रियों का भी कर्तव्य बनता है। **- योग सन्देश से साभार**

स्वतन्त्रता दिवस पर सम्मानित

वैदिक सत्संग मण्डल झज्जर के अध्यक्ष पं. रमेश चन्द्र कौशिक को समाज सेवा, समाज सुधार, यज-भजन प्रवचन द्वारा कन्या भूर्ण हत्या के विरूद्ध प्रचार करने एवं बेटी बचाओ अभियान को मण्डल द्वारा चलाए जाने पर स्वतन्त्रता दिवस पर सम्मानित करने पर वैदिक सत्संग मण्डल के सभी सदस्यों ने हर्ष व्यक्त किया है और यह सम्मान प्राप्त करने पर मण्डल के सदस्यों व सहयोग सदस्यों को प्रेरणा प्राप्त हुई है और बेटी बचाव अभियान को और तेजी से चलाने के लिए उत्साह पैदा हुआ है। मण्डल के सभी सदस्यो ने जिला उपायुक्त श्री चन्द्रशेखर का मण्डल अध्यक्ष पं. रमेश चन्द्र कौशिक को सम्मानित करने के लिए आभार व्यक्त किया है। जिनमें सुबेदार भरत सिंह, पं. जयभगवान आर्य, ब्रह्मचारी सुभाष आर्य, राव रतिराम, प्राध्यापक द्वारका प्रसाद, डॉ. नन्द किशोर सरदाना, कृष्ण कुमार शास्त्री, ओमप्रकाश व राजेन्द्र यादव, श्रीमती बल्ली पार्षद, श्रीमती उर्मिला रंगा पार्षद, भारत स्वाभिमान के योगाचार्य प्रवीन कुमार, नवीन कुमार, रामनिवास व इन्द्रजीत, मन्जू सैनी पत्रकार शहर के अन्य गणमान्य व मौजिज आदमी थे।

हंसो और हंसाओ

- रवि शास्त्री

- भोपू का सिर फट गया
  पप्पु-ये कैसे सिर फोड़ लिए।
  भोपू- मैं चप्पल से पत्थर तोड़ रहा था तभी मुझे एक आदमी ने बोला खोपड़ी का इस्तेमाल भी कर लिया कर।
- पति प्रवचन सुनकर घर आया और पत्नी को गोद में उठा लिया। पत्नी-क्या गुरुजी ने रोमांस करने के लिए कहा है? पति-नहीं पगली, उन्होंने तो कहा है कि अपने दुःख खुद उठाओ।
- पत्नी पति से-अगर मैं मर गई तो कितने दिनों बाद दोबारा शादी करोगे?
  पति-महंगाई का जमाना है इसीलिए कोशिश यही करूंगा कि तेरहवीं के साथ-साथ शादी का रिसेप्सन एडजस्ट हो जाये।
- ट्रेफिक इंस्पेक्टर-तुम गाड़ी बहुत तेज चला रहे थे चालान होगा। अपना नाम बताओ।
  लड़का-तिरूकल्वत्या धक्केपैराबली मुण्धुर मय्यैया स्वामी ट्रेफिक इंस्पेक्टर (नोट बुक बंद करते हुए) जाओ आइंदा गाड़ी धीमी चला ना।
- प्लेटफॉर्म पर ढेरो सामान के साथ खड़ी औरत को देखकर कुली ने पूछा-मैडम कुली चाहिए क्या? औरत ने कहा-नहीं मेरा पति है मेरे साथ।

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम ''दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर''। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, दूरभाष: 01276-230195 चलभाष: 9416054195

कड़वा सच

- श्रीमती सुदेश सन्दूजा, धर्मपुरा, बहादुरगढ़

गरीब मीलों चलता है, भोजन पाने के लिए,
अमीर मीलों चलता है, उसे पचाने के लिए।
किसी के पास खाने के लिए एक वक्त की रोटी नहीं,
किसी के पास एक रोटी खाने के लिए वक्त नहीं।
कोई अपनों के लिए अपनी रोटी छोड़ देता है,
कोई रोटी के लिए अपनों को छोड़ देता है।
इंसान भी क्या चीज है?
दौलत बचाने के लिए सेहत खो देता है और
सेहत को वापिस पाने के लिए, दौलत खो देता है।
जीता ऐसे है जैसे कभी मरेगा ही नहीं,
और मर ऐसे जाता है जैसे कभी जिया ही नहीं।
एक मिनट में जिन्दगी नहीं बदलती,
पर एक मिनट में लिया गया फैसला,
जिन्दगी बदल देता हैं।
यही एक कड़वा सच है, कि प्रभु न्यायकारी हैं।
अपने-अपने कर्मो का फल, हमें स्वयं ही भुगतना है।
प्रभु जो भी करते हैं, उसमें हमारी भलाई
छुपी होती है, हमारे सोचने से कुछ नहीं होता,
होता वही है जो प्रभु चाहते हैं।

ईश्वर से प्रार्थना

- मनुदेव वानप्रस्थी, आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़

सृष्टि रचाने वाले बिगड़ी बना दे।
भँवर में है नैया पार लगा दे।।
वह सदा सब का हित चाहता है,
दुःख-क्लेश-बन्धन व मम हर्वा है,
हम सब को भी शोक रहित बना दे।
भँवर में हूँ नैया पार लगा दे।।
पाप कर्म से कठोर दंड है देता,
न्यायादि गुणों से जग को चलाता,
हमसे भी पक्षपादि दुर्गुण दूर भगादे।
भँवर में है नैया पार लगा दे।।
हमारा आचरण यम नियमानुसार होवे,
वेदानुसार व्यवहार हम सब का होवे,
हमें तीनों एषणाओं से मुक्त बना दें,
भँवर में है नैया पार लगा दे।।
दृढ़ व्रती-दृढ़ प्रतिज्ञ होकर,
सदा आत्म विश्वास से परिपूर्ण होकर,
मनुदेव की ईश्वर प्राणिधान में रूचि बढ़ा दे।
भँवर में है नैया पार लगादे।।
सृष्टि रचाने वाले बिगड़ी बना दे।
भँवर में है नैया पार लगा दें।।

बुद्धिमान् पण्डित और मूर्ख बादशाह

– आचार्य सत्यानन्द 'नैष्ठिक'

शेखचिल्ली की मूर्खता की कहानियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं। शेखचिल्ली कोई व्यक्ति नहीं था। वह मूर्ख व्यक्ति का प्रतीक था। जो कोई व्यक्ति मूर्खता का कार्य करता तो उसे शेखचिल्ली की उपाधि मिल जाया करती थी। ऐसा ही एक मूर्ख बादशाह था। एक बार वह अपने मन्त्री के साथ अपने राज्य का दौरा करने निकला था। दौरा करते हुए एक दिन शाम को वे एक गांव के समीप से गुजर रहे थे कि वहीं चौपाल पर इन्हें कुछ भीड़ इकट्ठी दिखाई दी। देखा कि पेड़ के तले टिमटिमाते दिए के प्रकाश में कोई व्यक्ति एक पुस्तक लिए बैठा है।

बादशाह ने अपने वजीर को बात का पता लगाने के लिए भेजा था। वजीर भी कम नहीं था। बात पता लगाने के साथ-साथ वह पण्डित को भी साथ ही ले आया था। बादशाह आया जानकर सब लोग उठ खड़े हुए और उसे चारों ओर से घेर लिया। पण्डित को आया देख, वजीर के कुछ बताने से पहले ही, बादशाह ने उससे पूछा, "यहाँ क्या पहले ही, बादशाह ने उससे पूछा, "यहाँ क्या हो रहा है?" बादशाह सलामत! राजा रामचन्द्र की कथा सुना रहा हूँ।

बादशाह ने तन बदन में आग लग गई। बोला, हमारे होते हुए तुम दूसरे राजा की कथा क्यों करते हो?'

पण्डित एक क्षण के लिए तो चकराया गया था। फिर तुरन्त बोला, "हुजूर! राजा रामचन्द्र की तो रामायण बनी हुई है। लेकिन बादशाह सलामत की तो कोई भी रामायण है ही नहीं, फिर कथा किस तरह की जाए? अगर कोई हो तो मेहरबानी करके भिजवा दीजिए, मैं कल से बादशाह सलामत की ही कथा करूँगा।

बादशाह परेशानी में पड़ गया। फिर बोला, "नहीं, हमारी कोई रामायण नहीं है।" पण्डित ने मौके का फायदा उठाया। बोला, "हुजूर! अगर आदेश करें तो यह दास इस काम को कर सकता है?" बादशाह के मुख पर मुस्कराहट छा गई। बोला, "तुम यह काम कर सकते हो?" पण्डित ने कहा-"हुजूर! व ' तो सकता हूँ, लेकिन उसके लिए समय चाहि‹ और धन भी।"

"कितना समय चाहिए?" बादशाह ने पूछा। "कम से कम छह महीने तो लगेंगे ही।" "ठीक है और धन?" "हुजूर! दस हजार से तो कम में काम नहीं चलेगा।" "ठीक है, मिल जाएँगे।" बादशाह बोला-"आज से ही शुरु कर दो, कल से क्यों?

"लेकिन हुजूर! धन" बादशाह ने कहा, "धन कल मिल जाएगा।" 'जी हुजूर! मैं आज से ही लग जाता हूँ। लेकिन छः महीने से पहले यह काम नहीं होगा।

बादशाह चला गया और अगले दिन पण्डितजी के पास रूपया भी पहुँच गया। छः मास पूरे होने को आए तो एक दिन बादशाह को खबर मिली कि किसी गाँव का कोई पण्डित उनसे मिलने आया है। बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ। वह समझ गया कि कौन पण्डित आया है। उसने पण्डित को अपने दरबार में बुलाकर पूछा, "पण्डितजी। हो गई हमारी रामायण पूरी?"

"सरकार! बस पूरी ही समझिए। लेकिन..।" बादशाह ने उतावली में पूछा, "बोलो-बोलो! क्या बात है? क्या पैसे कम पड़ गए है?"

पैसों की बात नहीं मालिक। कुछ....। "कुछ क्या है? जल्दी बताओ।" पण्डित ने पूछा, "महाराज! राजा राम की रानी सीता को तो रावण चुरा कर ले गया था। आप उस दुष्ट का नाम बता दीजिए जो हुजूर की बेगम को चुरा कर ले गया था। बस उतने के लिए आपकी रामायण अधूरी पड़ी है। और सही जानने के लिए मैं यहां आया हूँ। यह बात किसी हरकारे से पुछवाना मैं ठीक नहीं समझता था।

बेगम की चोरी की बात सुन तो बादशाह की सिट्टी-पिट्टी गुम। बादशाह बोला, "ना पण्डितजी! ना! हमें माफ करो, हमें नहीं लिखवानी ऐसी रामायण।"

"हुजूर! वह तो पूरी भी हो गई।" हमने कह

जो दिया, हमें नहीं चाहिए ऐसी रामायण।'' बादशाह ने गुस्से में कहा। पण्डित इतने से कहां मानने वाला था। वह समझता था कि फिर किसी दिन इसको झक सवार हो और घूमता हुआ आकर कहे कि तुम राजा रामचन्द्र की कथा क्यों सुना रहे हो, तब मैं क्या करूँगा। उसने पूछा, ''महाराज, मैं गांव वालों को क्या सुनाऊँ? बादशाह के मुख से निकल गया कि तुम उसी राजा राम की कथा सुनाओ जिसकी रानी को रावण चुराकर ले गया था।''

पण्डित को और क्या चाहिए था। उसकी रामायण कथा तो सफल हो गई थी। धन का धन मिल गया। भविष्य में कथा सुनाते रहने की छूट भी।

शिक्षा- बुद्धिमान! व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्यपूर्व आचरण करके अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं। मनुष्य को युक्ति से कार्य निकालना चाहिए।

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ़, हरि.
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. चौ. मित्रसेन जी सिन्धु आर्य, उद्योगपति, रोहतक
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
11. श्री जे.आर. वरमानी, गुड़गाँव, हरियाणा
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओमप्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु. श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भरेली, सु. श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु. विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
41. श्री वेदपाल जी आर्य, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
42. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
43. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
44. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
45. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
46. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
47. श्री स्वदीप दास जी गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
48. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
49. चौ. हरनाथ सिंह जी राघव, खेड़ला, गुड़गांव
50. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
51. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
52. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
53. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
54. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
55. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
56. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
57. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
58. यज्ञ समिति झज्जर
59. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
60. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
61. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
62. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
63. मास्टर प्रह्लाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
64. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
65. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
66. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
67. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
68. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली

सृष्टि का संचालक निराकार परमपिता परमात्मा है

- डॉ. गंगा शरण आर्य

गतांक से आगे

प्रभु ने धरती बनाई, परन्तु उसके खण्ड-खण्ड का प्रभाव भिन्न है। कहीं सोना, कहीं चांदी, कहीं लोहा, कहीं पारा, कहीं सोडा, कहीं खार होती है। कोई बर्फीली की, कोई अन्न की, कोई बाग की, कोई चाय-काफी की, कोई पथरीली, कोई मैदानी है असंख्य (खानें) हैं, कोई लवण (नून), कोई नीलम, कोई हीरे पैदा करती है, कहीं नारियल उगते हैं और कहीं आम। कहीं जल है तो उनका प्रभाव भी अलग-अलग। कोई भारी, कोई हल्का, कोई कड़वा, कोई खारा (नमक जैसा) कोई मीठा, कोई तेलिया, किसी से अतिसार (दस्त) किसी से मलावरोध (कब्ज), किसी से ज्वर, किसी से स्वास्थ्य-लाभ होता है। रंग बनाये तो नाम एक, किन्तु रूप एक समान नहीं। पीले रंग को ही लो। आम, सन्तरा, नींबू, हल्दी केसर, सोना, सूर्यमुखी, गैंदा, अग्नि, सरसों के फूल सभी पीले हैं किन्तु एक से दूसरा नहीं मिलेगा यही दशा दूसरे रंगो की है स्वाद बनाए तो सब समान नहीं। खटाई को ही देखो! दही, लस्सी, कुल्फा, आम, नींबू, जामुन, आँवला, आलूबुखारा, किसी का स्वाद भी दूसरे से नहीं मिलता। करेला कड़वा, बीज फीका, नीम कड़वा, निम्बोली मीठी, नींबू खट्टा, बीज कड़वा, पीलू मीठे, बीज कड़वा। सन्तरे की बनावट तथा उत्पत्ति देखो। बीज श्वेत, डंडी मटियाली, पत्ते हरे, फूल श्वेत और मनोहर सुगन्धवाले, छिलका पीला, फॉके गुलाबी, एक-एक सन्तरे में बारह डलियाँ और एक-एक फॉक में तीन-तीन बीज, एक-एक सन्तरे में 36-36 बीज। अनार की गुँधावट देखो, कैसी बंधी हुई है। एक दाने को निकाल लो तो बड़े से बड़ा कारीगर वैज्ञानिक भी उसे फिर वहाँ नहीं जमा सकता। गुलाब के फूल में सुगन्धि, परन्तु पत्ते, डंडी और बीज में कुद भी नहीं। माता के गर्भ में बालक कैसे रहता है और कैसे बढ़ता है? कैसे उसका पालन-पोषण होता है? फिर किस प्रकार गर्भ-गुफा से इतना बड़ा बालक बाहर निकल आता है? मकड़ी अपने ही अंदर से कैसा महीन तार निकालकर किस प्रकार जाल बनाती है। शरीर की आंतरिक लीला भी प्रभु ने कैसी विचित्र रची है। मनुष्य एक पदार्थ को भी अनेक नहीं बना सकता, किन्तु प्रभु की लीला देखो! मनुष्य अन्न खाना चाहता है तो अन्दर जाकर उस अन्न का क्या-क्या बन जाता है फिर रंग भिन्न-भिन्न। हड्डी, पीपी, मांस, रूधिर, रस, मज्जा, चरबी, खाल, नख (नाखून), बाल वीर्य, थूक, खखार आदि।

कार्यालय फौडरी- आमाशय (मेदा) अपने सम्बंधित यन्त्रों सहित एक ऐसा विचित्र कार्यालय है जिसमें भांति-भांति की धातें (धातुएँ) ढलती हैं। भट्टी में अग्नि प्रदीप्त करने के लिए धौकनी की भी आवश्यकता है। हमारे दोनों फेफड़े दो ऐसी स्थाई धौकनियाँ हैं जो दिन-रात अग्नि प्रदीप्त करने के लिए निरन्तर फूंक लगाने में व्यस्त रहती है।

मलपात्र और मसाना- यह दो नालें हैं जिनमें ढली हुई धातुओं का मैल तथा इंजन का अनावश्यक जल एकत्रित रहता है। साधारण कार्यालयों में ऐसा जल स्वयंमेव बह-बहकर बाहर निकलता रहता है, किन्तु इसमें ऐसे जल और मैल (मल) का निकास कार्यालय के स्वामी की स्वीकृति और आज्ञा का निर्भर है, इसमें भी प्रभु का एक रहस्य है यदि मनुष्य-शरीर से मल-मूत्र का निकास मनुष्य की इच्छा के आधीन न होता, तो उसका शरीर, वस्त्र बिछौना, लेटने बैठने का स्थान सदैव गन्दा, दुर्गन्धियुक्त और घिनौना रहता बड़े-बड़े विशाला भवनों में मलस्थान (पखाना) प्राय: रहने के कमरों से दूर एक कोने में होता है और समय-समय पर साफ होता है। फिनाइल आदि से उसकी दुर्गन्ध दूर हो जाती है, वर्षा ऋतु में फिर भी दुर्गन्ध रहती है, किन्तु मनुष्य-शरीर में मल सदैव बना रहता है, फिर भी न तो शरीर के स्वामी को ही और न ही किसी आसपास वाले को ही उसे इस आन्तरिक मल की दुर्गन्ध आती है। इस प्रयोजन से प्रभु ने मोमी वस्त्र की एक 35 फीट लम्बी थैली बना रखी है जिसमें बड़ी दक्षता और चतुराई से इस मल को इस प्रकार लपेट रखा है वर्षो पड़ा रहे, परन्तु दुर्गन्ध बाहर न निकलने पाये। फिर आश्चर्य यह है कि एक फुट वर्गस्थान (आमाशय) में यह 35 फीट लम्बी थैली

ऐसी चतुराई से रखी है कि न बल ही पड़े और न पेंच ही और रखी भी जाय लपेटकर। माँसाहारी पशुओं के आमाशय में प्रायः न केवल कच्चा माँस ही वरन् पत्थर जैसी कठोर हड्डियाँ भी इस आमाशय की अग्नि में गलकर पानी सी पतली हो जाती है, किन्तु यह आमाशय जो एक नरम सूक्ष्म माँस से बना हुआ है उसपर पत्थरों के गलाने-वाली इस अग्नि का रत्तीभर भी प्रभाव नहीं पड़ता।

मूर्ति बनाने का कार्यालय- इस कार्यालय में मिला हुआ ही एक दूसरा कार्यालय भी है जहाँ पत्थर काटने और मूर्ति बनाने का काम होता है। इस कार्यालय में पौने दो इन्ज लम्बे कमरे में, जिसे बच्चेदानी कहते हैं, बिना किसी कारीगर, यंत्र या शोरो-गुल के चुपचाप ही मनुष्यों तथा पशुओं के बच्चों की नाना रूप तथा आकृति की मूर्तियां बनती हैं। संसार में कोई भी प्राणी श्वास लिए बिना जीवित नहीं रह सकता, परन्तु प्रभु की विचित्र कारीगरी यह है कि गर्भ में बच्चा साँस लिए बिना भी महीनों जीवित रहता है।

तारघर- इसी शरीर में एक बड़ा शानदार तारघर हैं जिसमें सैकड़ों बिजली के तार लगे हुए हैं, जहां रात-दिन तार-समाचार बाहर से पहुँचते रहते हैं। उनके पाने के लिए पाँच तार बाबू और एक हैडक्लर्क (मुख्याधिकारी) है जो सबकी पाई खबरें कार्यालय के स्वामी को पहुँचा देता है। यह तारघर शरीर का वह भाग है जिसे खोपड़ी कहते हैं शरीर में सैकड़ों पट्टे बिजली की तारें हैं। पाँच तारबाबू पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ है और मस्तिष्क (बुद्धि) उनका मुख्याधिकारी है।

फोटो के कैमरे- उनके साथ ही बड़ा बढ़िया फोटोग्राफी (छाया चित्र) का कार्यालय है जिसमें दो कैमरे (चित्र ग्रहण के यंत्र) उनके शीशे का घेरा 1/8 इंच है और उसका व्यास 1/24 इंच, किन्तु इतने छोटे शीशों द्वारा भी बड़े-बड़े दरयाओं, पहाड़ों, नगरों, वरन् देश-देशान्तरों के चित्र बड़ी सुन्दरता और सफाई के साथ खींचे जाते हैं और एक 6 इंच वर्ग-कैमरे में एकत्रित कर दिए जाते हैं। फोटोग्रमी का कार्यालय भी मस्तिष्क का ही एक भाग है। इसमें दो कैमरे दोनों आँखें है दो शीशे हैं आँखों की दोनों पुतलियां। आँखों के डेलों को बाहरी चोट से सुरक्षित रखने के लिए उस सर्वज्ञ प्यारे प्रभु ने उन्हें दो गहरे गढ़ों में रखा है, गर्द-धूल से बचने के लिए उनके आगे पलकों की चिकें लटका दी हैं और छेदों अर्थात् पपोटों के किवाड़ तथा परदे भी बना दिये हैं, जिससे कार्यालय बन्द हो जाने पर उन्हें नीचे गिराकर द्वार सर्वथा बन्द कर दिया जाए। टेलीफोन और फोनोग्राफी-इसी जगह एक और विशाल भवन खड़ा है जिसके दोनों और दो बड़े द्वार है। उसके एक भाग में टेलीफोन (मुख्य द्वारा फासले पर बातचीत करने का यंत्र) का सिलसिला बड़े विस्तृत रूप से स्थिर है और दूसरे में फोनोग्राफी का काम जारी है। इसमें दो ही तवे (प्लेटें) सैकड़ों वर्षों तक सुई बदले बिना ही बड़ी सुन्दरता से काम देते रहते हैं। यह भवन भी खोपड़ी में ही है जिसके द्वार दो कान है और कानों के अन्दरवाले परदे दो तवे हैं।

गायनालय- इससे मिला हुआ एक और कार्यालय है जहाँ नाना प्रकार के वाद्य यंत्र (बाजे)-सारंगी, सितार, मृदंगा, तबला, ताऊस, वीणा, बाँसुरी और हारमोनियम बनते और बजते-बजाते रहते हैं। विचित्र बात यह है कि इस कार्यालय में बने हुए सब बाजे एक ही तार से बजते हैं और केवल एक ही चाबी सैकड़ों स्वर निकालने का काम देती है यह कार्यालय शरीर के उस भाग में है जिसे तालु, जिह्वा, कंठ (हलक) कहते हैं और वह एक मात्र वह तार है जिसे धमनी (शिरा, शाहरंग) कहते हैं, और वह एक ही चाबी जिह्वा है।

पिसाई का कार्यालय- इस शरीर में एक आटा पीसने की मशीन (चक्की) लगी हुई है। चक्की चलते समय ओखल में हाथ डालकर माल ऊपर-नीचे करने के काम पर एक चतुर अनुभवी मजदूर लगा हुआ है जो चक्की के धमाधम चलते समय ओखल में बड़ी सफाई के साथ माल फेरता रहता है, किन्तु क्या मजाल जो चक्की हाथ को छू भी जाय। यह मशीन तालु मुख दोनों होंठ व दाँत है और मजदूर जिह्वा है जो ग्रास चबाते समय ग्रास को दाँतों तले नीचे ऊपर करते रहने में ही लगी रहती है।

नहर तथा सिंचन-विभाग- इनके अतिरिक्त यहाँ खेती-क्यारी का काम भी होता है, जिसके लिए नहर का एक बड़ा महकमा जारी है, इनमें छोटी-बड़ी सैकड़ों नहरें बहती है और देश के प्रत्येक भाग का सिंचन करती है, अर्थात् रक्त से भरी हुई सहस्त्रों नसे और नाड़ियाँ, असंख्य रोम अर्थात् शरीर पर के बाल,

मानो नाना प्रकार की खेतियाँ हैं।

निर्माण विभाग- यह भाग रात-दिन बनाव-बिगाड़ में लगा रहता है। सैकड़ों चोट फेट जो बाहर शरीर पर लगाती रहती हैं, वे बिना किसी चिकित्सा के अपने-आप स्वाभाविक रूप से ठीक होते रहते हैं।

चिकित्सालय-इनमें चिकित्सा तथा चीरफाड़ का काम भी निरन्तर होता रहता है। सैकड़ों आन्तरिक रोग अपने-आप ही प्राकृतिक रूप से दूर होते रहते हैं और कई आन्तरिक क्षत (जख्म) बिना किसी चिकित्सा के अंदर ही अंदर स्वयमेव भरते रहते हैं।

घंटाघर- इस महान् संसार और इसके अंदर नाना प्रकार के असंख्य कार्यालयों के प्रबन्ध को नियमपूर्वक रखने के लिए इसमें एक विशाल घंटाघर भी है, जिसकी मशीनरी बड़ी नियमानुसार चौबीसों घंटे टिक-टिक की ध्वनि करती है और लटकल (पैंडुलम) सदैव स्वभावत: हिलता रहता है। यह घंटाघर दिल और उसका नस-नाड़ी प्रबन्ध है इसकी सुई है नाड़ी (नब्ज) तथा उसकी धड़कन का शब्द टिक-टिक है। लटकन हृदय-यंत्र का लोथड़ा है। यह घड़ी समय बताने के साथ ही सर्दी-गरमी का अनुमान बताने वाले यंत्र 'बेरीमीटर' का काम भी देती है।

सन्तरी-बड़े-बड़े कार्यालयों के दरवाजों पर सन्तरी (सिपाही) भी कन्धे पर बन्दूक रखे इधर-उधर, दम लिये बिना टहलता रहता है ठीक इसी प्रकार प्राणवायु यहाँ पहरेदार है जो कभी रूके बिना बराबर अंदर आती और बाहर जाती रहती है यही उसका पहरा है यह कभी किसी को उल्टे मार्ग पर चलकर आगे बढ़ने नहीं देती। उदाहरणरूप से यदि कोई अन्न-कण अथवा जल बिन्दु अपना ठीक मार्ग छोड़कर आमाशय में जाने की जगह फेफड़ों की ओर जाने लगे तो यह उसे धक्का देकर बाहर निकाल देती है जिसे 'धसका लगना' बोलते हैं। अत: उपरोक्त सभी क्रियाओं का कर्ता अवश्यमेव है। वह दो या तीन नहीं हैं। केवल एक ही है, उसी को शास्त्रों में ईश्वर कहते है। जो शरीर रहित है जिसका निज् और मुख्य नाम 'ओ३म्' है।

-चरित्र निर्माण मण्डल, सैनी मोहल्ला, ग्राम-शाहबाद मोहम्मदपुर, नई दिल्ली

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	23.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	28.00	रु. प्रति किलो
विशेष	45.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	65.00	रु. प्रति किलो
सुपर डीलक्स	120.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

हिन्दी दिवस 14 सितम्बर

1. 65 वर्ष पूर्व हिन्दी को सर्वसम्मति से स्वतन्त्र भारत की राष्ट्र भाषा स्वीकृत तो की गई थी किन्तु वास्तव में इसे उचित महत्व नहीं दिया गया।
2. जून 2014 में राजग की मोदी सरकार के केन्द्रीय मंत्रियों से मोदी जी ने निर्देश दिया कि सरकारी कार्य अधिक से अधिक हिन्दी में किया जाए।
3. वर्धा (महाराष्ट्र) में 1997 से महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय चल रहा है।
4. रूस में मास्को और सेन्ट पीट्सबर्ग में वहां की सरकार ने एक-एक हिन्दी विश्वविद्यालय भी स्थापित किया है।
5. सम्पूर्ण विश्व में हिन्दी सिखाने की सर्वोत्तम सुविधाएँ रूस मे ही हैं।
6. हिन्दी संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषाओं में सम्मिलित होने की सबल स्थिति में है।
7. विश्व के 33 देशों के 127 विश्वविद्यालय आज इसे स्वेच्छापूर्वक अपना रहे हैं।
8. हिन्दी के प्रति उपेक्षा का भाव हिन्दी भाषी राज्यों में ही कहीं ज्यादा है जो निम्न तालिका से स्पष्ट है-

राज्य	कुल विश्वविद्यालय	हिन्दी विभागों की संख्या
उत्तर प्रदेश	42	20
उत्तराखण्ड	12	04
मध्य प्रदेश	26	17
हरियाणा	19	09
हिमाचल प्रदेश	19	10
राजस्थान	48	24
बिहार	15	12
झारखण्ड	10	07

इस दशा को देखते हुए हम सभी हिन्दी संस्थाओं से मांग करते हैं कि वे सभी हिन्दी भाषी संस्कारों से ज्ञापन देकर मांग करें कि सभी विश्वविद्यालयों में हिन्दी विभाग खोलना अनिवार्य करें क्योंकि इस समय 191 विश्व विद्यालय हैं किन्तु हिन्दी विभागों की संख्या केवल 103 हैं अत: 88 हिन्दी विभाग शीघ्र खोलने के लिए निर्देश दिए जाएं अथवा कानून बनाकर उन्हें बाध्य किया जाए।

9. हिन्दी की शब्द संख्या सात लाख के आसपास है जबकि अंग्रेजी की शब्द संख्या केवल ढाई लाख ही है।
10. हिन्दी में जैसा लिखा जाता है उसे वैसा ही पढ़ा जाता है जैसे क को क ही पढ़ा जाएगा लेकिन अंग्रेजी में सी को क और स भी पढ़ा जाता है। अंग्रेजी में ऐसे बहुत शब्द हैं।
11. आज विश्व के 132 देशों में रह रहे करीब 125 करोड़ भारतीय तथा विदेशी लोग इसे अपना रहे हैं।
12. दक्षिणी अफ्रीका में दिनांक 21.09.2012 में नवां विश्व हिन्दी सम्मेलन हुआ था। इसमें 18 भारतीय तथा 30 विदेशी विद्वानों को सम्मानित किया गया था।
13. अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य कला मंच, मुरादाबाद भी विदेशों में हिन्दी सम्मेलन करती है।
14. हिन्दी प्रचार वाणी मासिक पत्रिका बेंगलूर में छपती है और दक्षिणा भारत में 1979 से हिन्दी का प्रचार-प्रसार कर रही है।
15. तमिलनाडु हिन्दी का विरोधी राज्य है। उसकी राजधानी चैन्नई में 15000 हिन्दी भाषा मतदाता हैं। अप्रैल-मई 2014 के लोकसभा चुनावों में तमिल समर्थक पार्टियों ने भी हिन्दी भाषियों को लुभाने के लिए हिन्दी में प्रचार पत्रक छपवाए थे।

- आई.डी. गुलाटी संस्थापक एवं राजेश गोयल, अतिरिक्त महामन्त्री-प्ट, सावरकर वाद प्रचार सभा, बुलन्दशहर, हिन्दु महासभा का सहयोगी संगठन, मो. 08958778443

पेंसिल और रबर की बहस

पेंसिल को घमण्ड हो गया था, मैं हर किसी के काम आती हूँ। जो मैं लिख देती हूँ, वह होती है, मेरी नोक में शक्ति है। शार्पनर मेरी मदद करता है, मैं अच्छा बुरा कुछ भी लिखने में समर्थ हूँ। रबर बोला, 'पेंसिल बहन, तुम जब गलत लिख जाती हो, तो मेरे सहारे ही वह गलती ठीक की जाती है। मेरा महत्त्व इतना भर ही है कि तुम्हारी की हुई गलतियों को सुधारने में मैं सहायक हो जाता हूं।' रबर के समक्ष पेंसिल चुप हो गई थी।

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

अन्न एवं अन्नार्थ प्राप्त दान

श्री प्रमोद सलुजा जी पंजाबी बाग विस्तार दिल्ली	21100/-
स्व. विद्यावती बी-61 सी.सी. कॉलोनी, दिल्ली	10000/-
आर्य समाज सी-ब्लॉक, जनकपुरी, दिल्ली	5200/-
एरोल फॉरम्यूलेशन आसौदा बहादुरगढ़	5000/-
श्रीमती सीमा बजाज बी-2/29 पश्चिम विहार दिल्ली	4000/-
श्री राजवीर जी आर्य धर्मविहार बहादुरगढ़	3101/-
प्रि. कर्णसिंह जी डबास माजरा दिल्ली की रसीद बुक से प्राप्त	3100/-
श्री हरदयाल कटारिया जी विकासपुरी दिल्ली	2500/-
श्रीमती विरमा देवी आजादपुर दिल्ली	2300/-
सवेरा प्रिंटिंग प्रेस भगत सिंह मार्किट, बहादुरगढ़	2100/-
श्री नौरंग सिंह टीकरी कलां दिल्ली	2100/-
श्री कृष्णा और सुषमा दिल्ली	1500/-
श्री रामकुमार ओहल्याण सुपुत्र श्री तालेराम नम्बर दार, रोहतक	1111/-
माता पुष्पा चावला मॉडल टाऊन बहादुरगढ़	1100/-
सतीश कुमार सुपुत्र श्री महावीर सिंह टीकरी कलां, बहा.	1100/-
श्री ईश्वर सिंह जी सैनी विवेकानन्द नगर, बहादुरगढ़	1100/-
श्री यशदीप शर्मा सुपुत्र श्री सुरेश कुमार जी बहादुरगढ़	1100/-
श्री नवीन जी/प्रवीण जी सैक्टर-9ए, बहादुरगढ़	1100/-
श्री चन्द्रभान जी बहादुरगढ़	1100/-
श्री दिनेश कुमार जी अरोड़ा सोमानी कॉलोनी, बहादुरगढ़	1100/-
माता रामदुलारी बंसल जी बहादुरगढ़	1000/-
मेधाली सुपुत्री बिजेन्द्र शर्मा जी बराही रोड, बहादुरगढ़	1000/-
श्री सत्यपाल जी मॉडल टाऊन, बहादुरगढ़	551/-
श्री करतार सिंह जी आर्य टीकरी कला दिल्ली	520/-
श्री ऋषि गुप्ता आजादपुर दिल्ली	500/-
श्री कार्तिक बी-61, सी.सी. कॉलोनी, दिल्ली	500/-
दीपाली प्रीतमपुरा, दिल्ली	500/-
श्रीमती नेहा जी गुड़गांव	500/-
श्री हंसराज जी गुप्ता, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
श्री मिन्टू त्यागी फायर सर्विस दिल्ली	500/-
श्रीमती ललिता जी आनन्द पत्नी अनिलवीर जी आनन्द की.न.	500/-

विविध वस्तुएं

श्री जोगेन्द्र जी शंकर गार्डन बहादुरगढ़	63 किलो गेहूं
श्री राजवीर जी आर्य धर्मविहार बहादुरगढ़	आलु 20 किलो, टमाटर 4 किलो, आटा 10 किलो, रिफाईन्ड 5 किलो, नमक 3 किलो
प. राजकुमार जी सु. पं. भूप सिंह जी बरनाला बहादुरगढ़	150 किलो गेहूं
श्री मोक्ष दलाल बहादुरगढ़	50 किलो गेहूं
चौ. जसविन्दर नान्दल सैक्टर-6, बहादुरगढ़	251/- रूपये, 50 किलो आटा
फरिश्ता सोप एण्ड चरखा कैमिकल्स पंजाबी बाग,	200/-, 2 पेटी साबुन
श्री अशोक कुमार जी नागपाल झज्जर	200 मीटर टैरीकोट सफेद कपड़ा और बिस्कुट वितरण
मित्र ग्रुप लाईनपार बहादुरगढ़	रजिस्टर 50, पैन 90, पैन्सिल 40
श्री ओमप्रकाश जी नान्दल सैक्टर-6, बहादुरगढ़	35 किलो गेहूं
श्री शुक्ला जी नैनवाल मन्दिर टीकरी दिल्ली	1 टीन सरसो तेल

विविध भोजन

श्री रमेश जी दराल सुपुत्र श्री मामचन्द जी दराल टीकरी दिल्ली	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्री राजवीर जी आर्य छिक्कारा धर्मविहार बहा.	1 समय का विशिष्ट भोजन
कबीर आश्रम लाईनपार, बहादुरगढ़	1 समय का विशिष्ट भोजन, बच्चों को साबुन वितरण
श्री नरेश जी दराल सुपुत्र श्री मामचन्द जी दराल टीकरी दिल्ली	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्री अनिल कुमार जी सुपुत्र श्री सन्तराम जी लोहचब बुपनिया	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्री सुमित जी दलाल सु. श्री रामफल जी दलाल रामनगर, बहादुरगढ़	2 समय का विशिष्ट भोजन
श्री बृजभूषण टेक्सटाइल कॉर्पोरेशन गांधी नगर	1 समय का विशिष्ट भोजन

गौशाला हेतु प्राप्त दान

श्रीमती निर्मला देवी जी पत्नी स्व. श्री नत्थुराम जी बहादुरगढ़	1000/-
श्रीमती रमण सुपुत्री श्री देवमुनि वैदिक वृद्धाश्रम बहा.	500/-
श्री ईश्वरचंद हलवाई काठमण्डी, बहादुरगढ़	600/-
श्री सुशील कुमार जी जैन वर्धमान इण्डस्ट्रीज बहादुरगढ़	20000/-

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548503, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 सितम्बर 2014 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

फर्रूखनगर आश्रम में आयोजित 7वां स्थापना दिवस की सुन्दर झलकियां

आत्म – शुद्धि – पथ मासिक

सितम्बर 2014

छपी पुस्तक – पत्रिका

एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2012-14

प्रेषक – आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में –

1 आर्य सन्देश साप्ताहिक
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि
15 हनुमान रोड़ नई दिल्ली
पि. 110001

फर्रुखनगर आश्रम में आयोजित 7वां स्थापना दिवस की सुन्दर झलकियां

यज्ञशाला एवम् सत्संग हॉल हेतु अपील

दानी महानुभावों से विनम्र अभ्यर्थना है कि गुरुकुल अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रूखनगर गुड़गांव की यज्ञशाला एवं सत्संग हाल का निर्माण का कार्य अभी शेष है। यज्ञशाला की गुम्बद एवं सत्संग हाल का प्लास्टर एवं खिड़की, दरवाजे का कार्य अभी होना शेष है। दानी सज्जनों से प्रार्थना है कि इस पुनीत कार्य में अपना योगदान देकर अपनी स्मृति चिरस्थायी बनाकर पुण्य के भागी बनें।

निवेदक

स्वामी धर्ममुनि जी, मुख्याधिष्ठाता, मो. 9416054195